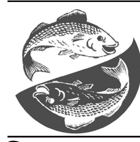
जल भँवर

राजदेव मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN :

मूल्य : भा. रू. २००/-
पहिल संस्करण : २०१५

श्रुति प्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८. दूरभाष- (०११) २५८८९६५६-५८
फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at : Ajay Arts, Delhi- ११०००२

Typeset by : Sh. Umesh Mandal.

Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो.-९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

Jal Bhanvar : A Maithili Novel by Rajdeo Mandal.

आमुख-

समस्त मिथिलांचल
कैँ
समरपित...

सुधी पाठक वृंद-

आभार-

1.

पंचमीक राति अन्तिम पहरपर लटकल छल। केतौ एकटा चिड़ै चुनचुनाएल।

राजेसरक देह चौकीपर पड़ल छेलै मुदा मन सपनामे दौगैत-पड़ाइत। निन्नमे डुमल साँसक तीव्रस्वर। ओइ गतिसँ दौगैत सपनामे केतएसँ केतए पहुँच गेल छेलइ। ओ देख रहल छल, सपनाक रंग भरल चित्र...।

गाछक निचला भाग अन्हारमे डुमल छल। ओइ अन्हारमे ओ ठाढ़ भेल छल। धरती आ अकासक बीच विचारकेँ पकड़ने।

अकस्मात भयंकर अट्टहास सुनलक। राजेसर चौंक उठल। आकि पाछूसँ केकरो कनबाक स्वर ओकरा हिला देलक। चारूभर तकलक। वायुक गति बिहाड़ि सन। आगूमे जेना किछो गरजल। देखलक जे राक्षस सन आकृतिबला एक हाँज जीव ठाढ़ भेल छेलइ। ओ सभटा एकेबेर आक्रमण करैले दौगल। जान बँचेबाक कोनो उपाय नै सुझलै। लपैक कऽ ओ डारि पकैड़ गाछपर चढ़ि गेल। आक्रमणक मुद्रा बनौने जीव सभ लपकैले चेष्टा करए लगलै। डरे थरथराइत राजेसर ऊपरका डारि पकड़बाक यत्न करऽ लगल। किन्तु डारिकेँ पकड़िते मोचरा जाइ छेलइ। मोचराएल डारिपर लटकल राजेसर चिचिया लगल। डारिकेँ कड़कड़ाइते राजेसरक धुकधुकी तीव्र भऽ गेल। भंयकर जीव सभ फानि-फानि कऽ ओकरा पकड़बाक

कोशिश करऽ लगलै। बँचबाक लेल ओ एमहरसँ ओमहर डारिपर झूलए लगल। ओकर देह कखनो अन्हारमे तँ कखनो इजोतमे चलि जाइ छल। तखने सौंसे गाछ कड़कड़ा उठल।

राजेसर जोरसँ हल्ला केलक-

“हौ भागै जा... जल्दी। गाछ खसि रहल छइ। तऽरमे पिचा जेबहक।”

भयानक जीव सभ उनटि कऽ तकैत भागऽ लगलै। ओकरा सबहक आँखिमे परेम आ घृणा दुनू भरल छेलइ। तखैने राजेसरक जेठ भाय-जागेसर जोरसँ हल्ला केलक-

“रौ... राजेसर। उठ जल्दी। भिनसरबा भऽ गेलइ। चल हमरा धार तक पहुँचा। नाह सबेरे खुगै छइ।”

राजेसरक सपना भंग भऽ गेल छेलइ। डरसँ घमाएल देहकेँ पोछलक। साँसकेँ सहज करैत बाहर दिस देखलक। घरसँ बाहर इजोत हुलकी मारै छेलइ।

◌

2.

सुर्जक स्वर्णिम किरिण पृथ्वीपर पसैर गेल छल। दूर-दूर धरि छुछे बाउल पसरल। हरियरीक नाओंपर केतौ-केतौ खढ़क झाँकुड़। बगलसँ बहैत धार। आ पानिपर दौगैत रंग-बिरंगक किरिण।

चमकैत पसरल बाउलपर दूटा मनुखक छाँह ठाढ़ भेल छल। उड़ैत बाउलपर दौगैत आँखि जेना किछो ताकि रहल छेलइ।

अगिला पुरुखक देह दुबर-पातर। रौद-पानिमे रेताएल श्याम-शरीर। हाथमे लाठी आ छाता लेने जागेसर ठाढ़ छल। पाछूमे ओकर छोट भाए राजेसर। पुष्ट शरीर। वर्ण कनी साफ। जुआनीक रंगसँ चमकैत। मुख उत्साहसँ दमकैत।

दुनू भाँइ भिनसरबे गामसँ चलल रहै। धारक किनारपर अबैत-अबैत भोरका किरिण देहपर पड़ए लगलै।

जागेसर बेचैन दृष्टिसँ धारक फनकैत पानि दिस तकलक आ बजल-

"रौ राजेसर, नाह कहाँ छै?"

"नाहबला कोनो साधारण लोक छइ। ऊ अपना बखतसँ एतइ। लोकक बेगरतासँ ओकरा कोन मतलब।"

"हँ कहै छी ठीके। बड़ टेँटियाह होइ छइ। एके मिनटमे अपन रूप बदलि लइ छइ।"

कहैत जागेसर अपना नजैरकेँ धार दिस दौड़ौलक मुदा मन बहिनक संकटमे घुरिया रहल छेलइ।

राजेसरक पएर स्वत: पानि लग पहुँच गेलइ। सोचलक, केतेक पानि हेतइ। हेलि कऽ टपल नै जा सकैत अछि।

एकटा पएर पानिमे देलक। हड़बड़ा कऽ कछेरक माटि नेने पानिमे खसल।

"आहि रौ तोरी के।"

डाँड़ धरि पानिमे चलि गेल। जागेसर 'हाँ हाँ' करैत दौगल। आ ओकर हाथ पकैड़ घींच लेलक। जागेसर डपटैत बाजल-

"एना जँ लुच्चा जकाँ करबहक तँ डुमि जेबहक। आब तूँ जवान भेलहक। देखै छहक, लोक प्रकृतिकेँ परनाम करै छइ। मनकेँ एकाग्र करै छै तब सोचि-विचारि कऽ कोनो काज करै छइ।"

मुड़ी झुकौने राजेसर भीजल नुआँकेँ झाड़ए लगल।

तखने एकटा पुरुख ओनएसँ आएल। सौंसे देह गरदा आ बाउल पड़ल। जागेसर ओकरा दिस तकैत बाजल-

"हौ भाय। नाह कहाँ छै?"

"हमहीं नाहक ठीकेदारी नेने छी। हम खढ़ बेचै छी। लेबहक?"

जागेसर पुछलकै-

"खढ़ बेचै छहक?"

"उपजै छै खढ़ आ बेचबै चाउर।"

पुरुख तमसाइत चलि देलक। राजेसर पुछलकै-

"एना तमसाइ किए छै?"

जागेसर बाजल-

"एकर कोनो दोख नै छै बौआ।"

धार दिस तकैत गम्भीर सुरमे बजल-

“दुख आ अभावसँ बेथित लोक अमरीत-वाणी केतएसँ अनतै। अमरीतक अभावमे बीख तँ राज करबे करतै। ई लड़ाइ होइते रहतै।”

नाहकेँ अबैत देख दुनूक मनमे आसक संचार हुअ लगलै।

◌

3.

सघन मेघक खण्ड सुरुजकेँ झँपने छल। दौगैत-पड़ाइत खोजैत मेघ। मेघक दोगसँ हुलकी मारैत तीखर किरिण।

बाध-बोनमे काज करैत लोककेँ दुपहरियाक भूख बेसी तंग-तवाह करै छइ।

नचैत दुपहरियामे बाध-बोन सुन-मसान। सुनहट बाट जेना निसाँस छोड़ैत रहै। बाटक दुनूकात पसरल खेत। केतौ-केतौ गाछी-बिरछी ठाढ़ भेल।

सुनहट बाटपर राजेसर बढ़ल जा रहल छल। रस्ता-पेराक नापैत पएर। मुदा मनमे सनसना रहल छेलै, साँझक गप्प। साँझेमे तँ सुनने रहै जे ओकर बहिन बेसी बेमार पड़ि गेल छइ।

तँए आइ भिनसरे ओकर जेठ भाय- जागेसर- बहिनक हाल-चाल बुझैले विदा भऽ गेल छेलइ। जागेसरकेँ कोसीक कछेर तक पहुँचबैले राजेसर संगे गेल छल। जागेसरकेँ नाहपर चढ़ेला बाद राजेसर आपस गाम दिस आबि रहल छेलइ।

ओकर बढ़ैत पैरक संगे विचारक क्रम सेहो बढ़ऽ लगलै। सोचए लगल, जिनगीमे केहेन-केहेन वियोगक छन अबै छै आ ओइ छनकेँ कल्पना

मात्रसँ लोक केतेक दुखित रहैत अछि। मुदा जखैन ओ दुखक छन आबि जाइ छै तँ केहेन सहजतासँ सभ सहि लैत अछि।

एके अँगनामे भाए-बहिन खेलैत-कुदैत, पलैत-बढ़ैत रहैए। माए-बाप, भाए-बहिनक बीच सिनेहक जाल केतेक सघन भऽ गेल रहैत अछि। किन्तु बिआह भेला बाद बहिनकेँ ऐ घरसँ विदा हुअ पड़ै छइ। दिन-दिनसँ जुआन भेल सिनेहकेँ छोड़ैत आ तोड़ै काल केहेन पीड़ासँ गुजरए पड़ैत हेतै?

भाए-बहिनक बीच निरन्तर बढ़ैत दूरी। गाम-घर, माए-बाप, अड़ोसी-पड़ोसी सभकेँ बिसैर बहिन सासुर दिस विदा भऽ जाइत अछि। ओइ बिछुड़ैत घड़ीमे बहिनक हृदए केना फटैत हेतै...? ओह...! बिआह लगीचेमे हेबाक चाही। जइसँ भेँट करैमे समस्या नै होइ। जागेसर भैया ई नीक नै केलक, जे बहिनक बिआह एतेक दूर कोसी धारक ओइ पार कऽ देलकै।

फेर ओकरा मनमे बहिनक संग खेलल गेल खेल सबहक स्मरण हुअ लगल।

तखने टिपिड़-टिपिड़ पानि पड़ऽ लगल। राजेसरक सोचक क्रम टुटल। ओ मुड़ी उठा अकास दिस तकलक। मेघ धरती दिस नमरल जा रहल छल। सौनक मेघ होइते छै अहिना। केनौउसँ एगो टुकड़ी नमरल आ झर-झरा कऽ बरैस गेल।

राजेसर अंग-पोछासँ मुँहपर पड़ल पानिकेँ पोछलक। आ आगू मुहेँ नजैर दौगेलक। बलान धारमे बाढ़ि आबि गेल छेलइ। कछेरक खेत सभ पानिसँ डुमल जा रहल छेलइ। बाउलक ऊँचका भिण्डा सभ सूखल छेलइ। रोपल धानकेँ बाउलसँ भरैत बलान माय।

केतेको बरिससँ ई बलान नदी ऐठाम घुरिया रहल छइ। आस-पासक गाम सबहक माटकेँ प्राण विहीन कऽ देने छइ। कोनो ठाम बाउलक भिण्डा तँ कोनो ठाम खत्ता। केतौ समतल नहि। केकरो खेतमे नीक माटि तँ केकरो खेते मरा गेल। कोइ मनक मन धान उपजबैत तँ कोइ हक्कन कनैत। तब ने कोइ ईहो कहै छै, आएल बलान तँ बान्हू दलान आ गेल बलान तँ टुटल

दलान। स्वतंत्रताक लेल ई नदी किछो कऽ सकैत अछि। केतबो ऊँचगर बान्हसँ घेर दियौ बाउलसँ भरना करैत फानि कऽ ओइपार टपि जाएत। जइ बाटे मन होइ, जइ गाम जेबाक होइ, ओतए चलि जाएत।

ऐबेर ई नदी राजेसरक गामकेँ चारूभरसँ घेरने छइ। उत्तरसँ अबैत धारा दू भागमे विभक्त। गामक पुबरिया धारा मोट-गहींर मुदा पछबरिया धारा पातर। जेना बड़का साँप गामकेँ घेरने होइ। गामक उतरबरिया कात ऊँचका भिण्डापर स्कूल। धारक घेरासँ बँचल छइ। स्कूलक भिण्डापर ठाढ़ भऽ कऽ सौंसे गामक छप्पर देखल जा सकै अछि। दूर-दूर धरि पसरल खेत...।

राजेसरक गाम। कोनो बेसी नमहरो नै आ ने कोनो बेसी छोट। सभ तरहक लोक आ जाति। जातिक भेद नहि, एकेठाम बसल। दूटा टोल मुदा एकेमे मिलल। किन्तु अन्तर अछि-एकटा। गरीब, मजदूरक विचार सभ रंगक। मुदा जमीनबला धनिक सबहक विचार एके रंग।

राजेसर सोचलक, की होइ छै जे हमरा सभकेँ आपसी झगड़ासँ फुरसति नहि भेटैए आ ओकरा सभकेँ एके इशारा...।

मेघक गर्जनासँ ओकर धियान दोसर दिस भऽ गेल।

पानिक झीसी बन्न भऽ गेल छेलइ। हवामे ठण्ढी आबि गेल छेलइ। मनकेँ प्रसन्न करैबला समए...।

राजेसर अपना गामक बाधमे पहुँच गेल छल। कनी आगूसँ हड़हड़ाइत, फनकैत भूतही बलानक धारा...।

राजेसरक पएर गाम दिसक बाटपर बढ़ऽ लगल। बर्खामे भीजला कारणे देहक ठेही निकैल गेल छेलइ। ठण्ढाएल हवासँ मन आन्नदित हुअ लगलै। ओ गुनगुनाए लगल। शनैः शनैः अवाज तीव्र हुअ लगलै-

"कहमाँ बहै छै मैया कमलेसरी
कहमाँ बहै छै बलान।
माँझ तिरहुत बहै छै मैया कमलेसरी

अलापुरमे बहै छै बलान।
केते जल बहै छै मैया कमलेसरी
केते जल बहै छै बलान।
अगम जल बहै मैया कमलेसर
रिमझिम बहै छै बलान।
कथी दऽ बोधबै मैया कमलेसरी
कथी दऽ बोधबै बलान।
पान-फूल दऽ बोधबै मैया कमलेसरी
पाठी दऽ बोधबै बलान।”

‘छपाक’ दऽ पानिमे किछु खसल। ओही शब्दसँ गीतक क्रम टुटि गेल। राजेसर अकचका कऽ चारूभर तकलक।

आँखि खोललक मुदा किछो नै भेटल। मन घुरिया लगलै आ देह आगू बढ़ल। ओ बाउलक ऊँचगर ढूहपर चढ़ि चारूभर नजैरकेँ दौगेलक। आँखि ठाढ़ भऽ गेल।

धुरक कातसँ एकटा नारीक आकृति ओकरे दिस टक-टक तकैत। ठोरपर मन्द मुस्कान।

राजेसर छड़ैप कऽ ढूहपर सँ उतरल। ओ गमछासँ मुँह पोछैत ओम्हरे टाँग बढ़ेलक। लग गेलापर देखैत अछि जे नीता धूरक कातमे बैसल अछि। मुड़ी नमरौने खुरपीसँ माटि कैच रहल अछि। कातमे घाससँ भरल छीटा छइ।

राजेसर अनुमान लगेलक जे यएह माटिक ढेपा पानिमे फेकने हएत। मुदा तेना अनठौने अछि जे के कहत एकर किरदानी छी।

राजेसर किछु काल धरि ओकरे दिस तकैत रहि गेल। हरिअर रंगक साड़ीकेँ ठेहुन धरि समेटने। बाँहिपर कसल ब्लाउज। सिनुरिया भेल मुँहपर लटकल एकटा लट। बरखामे भीजल केशसँ चुबैत पानिक बून ललियाएल

कपोलपर ससैर रहल छल। लगै छेलै जेना करियाएल मेघसँ टपकैत मोती चानपर गिर रहल होइ।

पिआसल नजैर पिबैत रहल रूपक पानि, किन्तु केते काल? किछु एहनो समए होइ छै जइमे अभिनय चलैत-चलैत यर्थाथ बनि जाइ छइ। आ ओइ यर्थाथकेँ सहजताक संग अंगीकार करऽ पड़ै छइ।

राजेसर खखसल। नीता अकचकाइत मुड़ी घुमौलक। पातर ललियाएल ठोरपर मन्द मुस्कान।

आँखिक भवमे सहज आकर्षण। राजेसर तकिते रहि गेल।

नीता बजली-

"की यौ गबैया, बड़ी टहकारसँ गाबै छेलौं। जेहने गीत तेहने मधुर गला।"

राजेसर ठाढ़भेल ओहिना तकैत रहल, जेना पहिने तकै छल।

नीता नजैर घुमबैत पुन: बजली-

"हे यौ, एना किए टकटकी लगौने छी, हम की कोनो चुड़ीन छी।"

राजेसर हँसैत बाजल-

"हमरा तँ बुझि पड़ैत अछि जे अहाँ जलपरी छी। तुरन्ते पानिसँ निकैल कऽ बैसल छी। तँए मन होइए जे अहाँकेँ देखते रही।"

"अहाँकेँ तँ हरदम मजाके सुझैए।"

"ई मजाक नै अछि नीतू। लोक जँ नीक कहैत तँ अहाँकेँ आँखिक सोझहासँ परोछ नइ हुअ दइतौं। मुदा करब की...।"

"रोकैत के अछि, अहाँकेँ?"

"रोकत के हमरा। मुदा बिआहसँ पहिने ई गप्प ठीक नै अछि। समाजक लाज-धाक तँ राखए पड़ै छइ। जनिते छिऐ, अपना गाममे केहेन-केहेन अगिलगौना सभ अछि। छनेमे तिलकेँ ताड़ बना देत।"

"तँए ऐ डरे चारि दिनसँ नुकाएल छेलौं।"

“से बात नै छइ। माइक बेमारीक कारणे ओझरा गेल छेलौं। पथ-पानि,दवाइ करैमे अपसियाँत छेलौं।”

“सएह यौ, हमरा तँ कखनो काल डर भऽ जाइत अछि। कहींहम बिच्चे धारमे ने डूमि जाइ।”

“अहाँ घबराउ नै। हमरा शपथपर बिसवास राखू। अहाँकेँ छोड़ि दोसरसँ हमर बिआह नै हएत। किछु दिन परतीछा करए पड़त।”

नीताक मुँहपर खुशीक रेखा आएल आ सिनुरिया रंग छोड़ैत चलि गेल। गप्प दुनूकेँ आर निकट लाबि लेलक।

नीता मुड़ी नुहरौने बजली-

“परतीछा तँ हम जिनगी भरि कऽ सकै छी। मुदा एकटा गप्प बुझि लिअ। जहिया ई बात होएत तहिया गाममे हड़कम्प मचि जाएत।”

“से किए? बिआह तँ होइते रहै छइ।”

“होइ छइ। अपना जातिमे। आन जातिमे नहि। गरीब-धनिक सेहो देखल जाइ छइ। हम तँ जातियो आ धनोमे अहाँसँ हीन छी। ओनऽ परिवार आ समाज ओहो सभ रोकत।”

“अहाँ बेकारे चिन्ता करै छी। हमरापर बिसवास राखू। हम केकरोसँ डरेबला नै छी।”

कहैत राजेसर आरो लग सहटि गेल। नीताक बाँहि दिस तकैत बाजल-

“अहाँक बाँहिपर ई कथीक चेन्ह छी? कोइ मारलक की?”

“हँ, बाबू खिसया कऽ एक छौंकी मारलक।”

“की भेल रहै से?”

“धरमलालक काज गछने रहै। हमरा कहने रहै जे ओकरा अँगना जा कऽ काज कऽ दिहैन। हम नइ गेलिऐ।”

“किए नै गेलिऐ?”

“हे यौ, ओकरा ऐठाम जँ काज करैले जाइ छी तँ लगैत रहैए जे धरमलाल आँखिमे गिर लेत। हरदम टकटकी लगौने रहै छइ। हमरा डर होइए। बाबू ई बात बुझबे ने करै छइ। कहबै केना।”

“अहाँ चिन्ता नै करू। हमर मोटका डेरहत्थी लाठी राखल छइ। जँ अहाँक किछ कहत तँ कपारे फोड़ि देबै।”

“हे यौ, बापक संगे ओकर बेटो ओहने छइ।”

गप-सप्पक क्रममे राजेसरक अंग नीतासँ स्पर्श भऽ गेलइ। स्पर्शक सुखद आकर्षण...।

राजेसर चाहलक जे नीताकेँ पाँजिया ली। नीता बँचबाक लेल चेष्टा केलक आ धड़फड़ाइत धारमे खसि पड़ल।जलक तीव्र वेगक कारणे भँसिया लगल। मुदा राजेसर चट-दे धारमे धसि गेल आ नीताक बाँहि पकैड़ कछेर दिस घिंच लेलक।

दुनू हतप्रभ। एक दोसर दिस तकैत। डर आ सिनेह एके संग बरखैत...।

नीताक सभटा वस्त्र भीज कऽ देहमे सटि गेल छेलइ। राजेसरोक वस्त्र डाँड़ धरि भीजल।

अपना दिस धियान जाइते नीताक नजैर नीचा झूकि गेल। पानिक शोर सुनहटकेँ भंग कऽ रहल छेलइ।

दूरसँ कोइ खखसल। दुनुगोरे मुड़ी उठा कऽ देखलक। कालीकान्त कोदारि कान्हपर नेने आबि रहल छेलइ। किछु एहनो लोक होइ छै जेकर डर सभकेँ होइत रहै छइ। आ ओकरा तापसँ लोक हटले रहैए। नीक आ अधलाहक मध्य डरक सत्ता, आ सत्ताक निच्चाँ सुख-दुखमे डुमल लोक।

राजेसर आ नीताकेँ जेना डर चारूकातसँ घेरि लेलक। दुनू आँखिएसँ किछु गप्प केलक आ अपन-अपन बाट धऽ लेलक। आ धारक पानि जेना हँसए लगल।

◌

4.

राजेसरक देह थाकल-ठेहियाएल आ निन्नमे मातल छेलइ। मुनल आँखिमे नचैत रहै- सपनाक सतरंगी संसार।

ओ स्वच्छ झीलमे हेल रहल छल। गहींर झील। अगम-अथाह, झलमलाइत पानि। कनी अन्हार कनी इजोत। मुदा ओइ पानिमे राजेसरकेँ डर नइ होइ छेलइ। शरीरमे स्पर्श करैत जलसँ ओकरा सुखद अनुभूति भऽ रहल छेलइ। ओ हेलैत आगू बढ़ले जा रहल छल। आकि कियो गट्टा पकैड़ झमारऽ लगलै। कानकेँ कोनो शबद हिलौलकै।

भुक्क दऽ ओकर निन्न टुटि गेलइ। धड़फड़ा कऽ उठि गेलइ। छनेमे सुन्दर सपना आगूसँ अलोपित भऽ गेल छेलइ।

ओ अँङ्ठी करैत उठि कऽ बैसल।

आगूमे भौजाइकेँ ठाढ़ भेल देखलकै। ओसारसँ नीचाँ उतैर अकास दिस तकलक तँ देखलक जे ललियाएल सुरुज धरती दिस हुलकी मारि रहल छेलइ। खोंतासँ बाहर चिड़ै-चुनमुनी चुन-चुना रहल छल। मेघ अपन मोहक चित्र बना रहल छेलइ।

भौजाइक शबदसँ राजेसर पाछू घुमि तकलक।

“गिरहत तकैले आएल छेलइ। काज गछने छल। जाइयौ ने। आइ भाइक बदलामे काज कऽ देबै।”

गप्प सुनि जेना तुरतेमे राजेसरक मन तितौंस भऽ गेलइ। मुँह घोंकचबैत ओ दुआरिसँ बाहर विदा भऽ गेलइ।

अदहा सौन सनसना कऽ बीति गेल छेलइ। रेड़-बरहा करितो धन-रोपनी तेजीसँ भऽ रहल छल। एहेन समैमे जनो-मजदूर खुशामदोपर नइ भेटत।

रोपनी-कटनीक लेल लोक बाहर चलि जाइत अछि। काज केनिहारक अभाव सोभाविक छइ। काज करेबाक अछि तँ खुशामद करए पड़त। अहिना होइ छै- करवनो नाहपर गाड़ी तँ करवनो गाड़ीपर नाह।

जन-मजदूर, काज केनिहार, श्रमशक्तिकेँ ने मान-सम्मान आ ने उचित श्रमक मूल्य भेटै छइ। सोभाविक छै जे ओ सभ पलायन करतै।

राजेसरक सोच फेर दोसर दिस घुमलै। गछल छै तँ काज करैले जाए पड़त।

ओकर पएर पोखरिक महार दिस बढ़ल।

दरबज्जापर सबहक बरद सानी-कुटी खा रहल छेलइ। किछु गिरहत टेक्टरक जोगाड़मे लगल। गप हँकैत। धनक ठेसी सभसँ बेसी।

"धुर हम तँ दू दिनमेखेती कऽ लेबै।"

अधिक खेतबला सभ जनकेँ होहकारने खेत दिस जा रहल छल।

"रौ जल्दी चल। खेत चटपटाएल छइ। पानि सुइख जेतौ तँ मुँह तकैत रहि जेमें।"

चौबटियापर मलकेसर जोर-जोरसँ सोर पाड़ि रहल छेलै-

"रौ ढोकबाऽ ऽ ऽ। दुपहरिया भेल जाइ छइ। तूँ सभ पड़ले रहमें।"

ओइ टोलक लोककेँ बुझले छै जे गिरहतकेँ चिचियाइक आदत छइ। तँए अनठौने अछि।

मलकेसर फेर हल्ला केलक-

"रौ सुनै छीही आकि नइ। रौ ढोकबाऽ ऽ ऽ। मरि गेल छी की...?"

मखना ओही टोलपर सँ आबि रहल छल। एक नम्बरक बकटेंट अछि। ओकरा बुझल छेलै जे मलकेसरक बाप कारी बाबू एकबेर घरढुक्का काण्डमे पकड़ा गेल रहइ। ओही दिनसँ परोछमे लोक ओकरा करिया बोता कहए लगलै। मलकेसर जँ अनछपोमे सुनि जाइ तँ झगड़ा शुरू...।

मलकेसर हल्ला करिते छल। मखनो जोरसँ सोर पाड़लक-

"बक् छू...। बक् छू...। करिया बोता बक् छू...।"

मलकेसरक आँखि ललिया गेलइ। तामसे हाथ थरथराए लगलै। हाथमे लाठी रहबेकरै। लाठीक हूर उठा कऽ ओकरा लगीच गेलइ।

"रौ सार, तूँ एहेन बात बजमेँ। देखै छी लाठीक हूराठ। एके हूराठमे...।"

"हे, हम तोहर करजा धारने छियह आकि कमाएल खाइ छियह। ईह, टेरही देखबैत अछि!"

"तूँ एहेन अधला गप बजलेँ किएक? तूँ हमरा...।"

"हम तोरा नहि कहलियऽ हम तँ अखनियोँ बोताकेँ सोर पाड़बै- बक् छू...। बक् छू...।"

मलकेसर तामसे थरथराए लगल। करोध बरदाससँ बाहर। ओ मखनाक मुँहकेँ लाठीक हूराठसँ हूराठि देलकै। अचक्केमे चोट लगलासँ मखना चितंगे खसि पड़ल।

लाठीकेँ सोझ करैत मलकेसर बाजल-

"की बुझि पड़ै छौ तोरा, कमजोर। रौ बाप तँ हमरा सोझहामे बजबे नइ करतौ आ तूँ फटर-फटर...।"

कहैत घुमि कऽ विदा हुअ लगल आकि मखना सुतले-सुतल ओकर टाँग पकैड़ सट दऽ घींच लेलक। मलकेसर मुहेँ भरे गिरल। ओइठाम राखल पथ्थलपर गिरलाक कारणे डाँड़मे बेसी चोट लगि गेलइ।

बात आगू बढ़ितै ताबे 'हाँ हाँ' करैत राजेसर बीचमे पहूँच गेलइ। खेत-पथार दिस जाइत गौआँ-घरूआ ठमैक गेल।

दुनुगोरेकेँ पकैड़ अलग केलक। फोंफियाइत मलकेसर बाजल-

“देखलिऐ ने यौ अपने लोकैन, ई छौड़ा हमरा डाँड़ सरका देलक। रौ रजेसरा गवाही रहिहेँ।”

भीड़सँ अवाज निकलल-

“यौ मलकेसर बाबू, अहाँ शान्त रहू। साँझहेमे पञ्चैती करब। एतेक ठेसी।”

“हँ यौ, एकरा सबहक मन बढ़ि गेलइ। जेतए देखियौ, जबरदस्तीए बात करत। बुढ़बाकेँ डाँड़ सरका देलकै।”

“मखनोक मुँह फुला देलकै। कोनो की एके दिस गलती भेलइ। फटाक दऽ पहिने लाठी नै चला देबाक चाही।”

“साँझेमे फरिया जेतै जे केकर गलती छइ।”

“हँ हँ, बुझले तँ छै जे गाममे केहेन पञ्चैती होइ छइ। मुँह देख मुंगबा...।”

राजेसर चुपचाप ओही भीड़मे ठाढ़ छल। कालीकान्त कार कौआ जकाँ टाँहि दऽ बाजल-

“रौ रजेसरा हम तोरा तकने फिरै छियौ। तूँ पञ्चैती करै छेँ। हर-जन खेत पहुँच गेलइ। जल्दी चल।”

लबरा ऐबते बाजल-

“रौ चल करैले खेती-पथारी, नइ तँ बिका जेतौ बाड़ी-झाड़ी।”

“देखही लबरा ऐबते अपन लबरपन शुरू करि देलकै।”

“तँ हम कहाँ कहै छिऐ- बक् छू...। बक् छू...।”

सभ हँसैत-मुस्कियाइत चलि देलक।

◌

5.

दिन भरिक काज कऽ जखैन लोक आपस अबैत रहै छै तखैन सफलता-विफलता, जश-अपजश, नीक-अधला सभ घेरने रहै छइ।

रोपनी-कमैनी करैबलाकेँ तँ बाते किछु आर रहै छइ। रौदाएल देह, घामसँ भीजल कपड़ा-लत्ता। भुखाएल पेट, पियासल मन, मुरझाएल मुँह, टाँग-हाथमे सटल थाल-कादो।

गाम दिस बढ़ैत पएर बाधक चिन्ता छोड़ि दइ छइ। किन्तु गाम परहक चिन्ता कपारपर चढ़ि जाइ छइ। एहेन बखतमे आँखिमे तामस नचिते रहै छइ।

सुरूज डुमैमे अखैन किछु बिलम्मे छेलइ। राजेसर बँसबिट्टी लग आबि ठाढ़ भऽ गेलइ। आँखि चारूभर घुमि-घुमि ताकए लगलै।

अहीठाम तँ नीता भेँट करैले कहने छल? कहाँ देखै छिऐ। ठकि लेलक की?

फेर ओकर पूर्व मिलनक घटना सभ मन पड़ए लगलै। आ जेना शीतल बसातक एकटा झोंक आबि देहकेँ सिहरा देलकै।

आहट सुनलक तँ मुड़ी उठा कऽ आगू तकलक। धरमलाल बाबूक बेटा कुलानन्द लगमे आबि गेल छेलइ।

चारूभर नजैर घुमबैत कुलानन्द ऐँठि कऽ बाजल-

“रौ रजेसरा, एना चोर जकाँ की तकै छी?”

राजेसरो केना चुप रहितए, बाजल-

"जेकरा काज-धंधा नै रहै छै से अहिना बताह जकाँ वौआइत रहै छै आ लबर-लबर केने घुमै छइ।"

दुनूमे बकटेंटी शुरू भऽ गेलइ।

"हे रौ, हम सबटा गप बुझै छियौ। बाधे-बोनमे जे रसलीला केने घुमै छीही से के नइ जनै छौ। जहिया चोटपर चढ़बीही तहिया बुइझ पड़तौ।"

"यौ कुलानन्द, हमहूँ सभ बात जनै छी जे घरेमे अहाँ की सभ करै छिऐ। डुमि कऽ एना पानि किए पीबै छी। हमरा डेराउ नइ। जहिया हमर मन गरमा जाएत तँ डेरहथ्थी हमरा काँखे तर रहै छइ।"

"ओऽ ऽ, ई गप तँ बिसैर गेल रहियौ जे तूँ गरीबक नेता छें। सुनै छियौ जे मुखियासँ ठाढ़ हेमें। एहने चोरा-छीनरा मुखिया होइ छै रौ।"

"गौआँ-घरूआ चाहतै तँ हम मुखिया पदसँ लड़बै। आ अहाँकें कहने थोड़े किछो हएत। अखैन केहेन मुखिया अछि से तँ जनिते छिऐ।"

"रौ, शिवकान्त बाबू तँ दू पीढ़ीसँ मुखिया बनल छथिन। हुनकर मोकाबला तूँ करबीही। पसङ्गो बरबैर छीही, हुनका सोझहामे तूँ। फूकतौ तँ उड़ि जेबही। रे बुड़ी, देहपर न लत्ता, चौधरी बोलत्ता। बापसँ भेंट भऽ जेतौ।"

राजेसर डेरहथ्थी काँख तरसँ निकालैत बाजल-

"हे, मुँह सम्हारि कऽ बात करू आ नइ जँ अखने फरियेबाक अछि तँ फरिया लिअ।"

"रौ, हम तोरासँ लड़ि कऽ अपन मान घटाएब। लोक कहत जे लड़बो केलकै तँ कीड़ी-मकौड़ीसँ।"

"से तँ हमहूँ घरढुक्कासँ नहि लड़ऽ चाहै छी।"

"समए आबऽ दही डाँड़ सरका देबौ जे उठले ने हेतौ।"

"लोक हमरा संगे अछि। हमरा गीदर-भौकी नइ देखाउ। नहि तँ डेन-बाँहि टुटि जाएत।"

"ठीक छइ।"

तामसे डेन फरकबैत दुनू दू दिसामे चलि देलक।

बँसबिट्टीसँ एक हेँज कौआ-मेना फड़फड़ाइत उड़लै आ अपन-अपन संगीक संगे अकासमे निर्विघ्न विचरण करए लगल।

◌

6.

गामक चौबटियापर ठाढ़ ई पीपरक गाछ आब केतेक चतैर गेल छइ। कोनो आइसँ ई गाछ छइ। बुढ़े-पुरान कहत जे कहिया रोपल गेल।

आब तँ माटि भरि कऽ चबुतरो बना देल गेलइ। पहिने तँ लोक भुँइएपर बैसै छेलइ।

पञ्चैती की कोनो आइसँ होइ छइ। हँ, जमानामे तँ कोटो-कचहरी नहियेँ रहइ। पञ्चैतीएमे न्याय होइ छेलइ।

जेतए न्याय ओतै अन्याय। लगबैत रहू उपाय। मनुख छै तँ झगड़ा हेबे करतै। तामसो तँ लोककेँ संगे छन्हि। तामसपर लोक की नियंत्रण करत। लोकेपर तामस नियंत्रण करैत अछि। तामसपर नियंत्रण केलासँ की हेतै?

दोसर बाटे आर दूना बैगसँ बहतै। कोनो तरहेँ जँ तामस एबाक दुआरि सभ बन्न भऽ जेतइ। पहिने तँ ओकरा संगी सभपर रोक लगबए पड़तै।

गामक चौबटियापर लोक सभ एका-एका जमा भऽ रहल छेलइ। आइ कोजो करैत काल सभकेँ पञ्चैतीएपर धियान रहइ।मनमे रहै छै- अपना लड़ाइ-झगड़ा नै करब तँ दोसरोकेँ लड़ाइ करैत देखबै। अन्तरक सभ बातसँ परिचित भऽ जेनाइ की सहज छइ। भीतरिया कंकालकेँ देखनाइ बड़ डेरौन...। पञ्चैती तँ जमानामे होइ छेलइ। दूधक दूध आ पानिक पानि बेरा दइ छेलइ। अखैन तँ पञ्चैतियोमे घूसखोरी, जातिवाद, पाटीवाद, अपन-आन...।

सभ अपना-अपना सुआरथमे डुमल।

न्यायक कण्ठ मोका जाइत अछि। केतेको समस्या फन-फना कऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि।अन्यायक बदला आइ नहि काल्हि अन्याय भेटते अछि। गाछ रहतै तब ने झटहो मारलापर फले भेटतै।

साँझक अन्हार गाछ-पत्ता सभपर पसरए लगल छल। पछुआएल कौआ-मेना काँइ-काँइ करैत खोंता दिस पड़ाएल जा रहल छेलइ। गोसाँइ घरमे दियावाती भुकभुकाए लगल छेलइ।

चबूतरा लग तीन-चारिटा पटिया बिछा देल गेल छेलइ। लालटेनक मधिम इजोतमे सबहक मुँह ठीकसँ नहि देखाइत रहइ। गाम-घरमे बिजलीक कोन काज। चौबीस घण्टामे कखनो काल एक आध घण्टाक लेल आबि गेल तँ लोक तिरपित भऽ जाइत अछि।

किछु लोक पटियापर बैसल छेलै तँ किछु कातेमे फुसराहटि कऽ रहल छेलइ।

मधुमाछी जकाँ घनघनाइत स्वर। स्पष्ट रूपें नहि सुनाइ छेलइ।

किछु लोक निरंतर उपेक्षित आ दबावमे रहलाक कारणे सबहक सोझहामे बजबाक साहस नै कऽ पबैत अछि। ओहन बेकती सभ काते-करोटमे बाजि-भुकि कऽ संतोख कऽ लैत अछि। सभ ढंगक बेकतीकेँ समाजमे जरूरतो तँ रहबे करै छइ।

किछु जन-मजदूर सभ राजेसरकेँ कातेमे घेरि लेने छेलइ। अपन-अपन उपदेश झाड़ि रहल छल।

स्वार्थक तँ रूपे तेतेक होइ छै जे के चीन्ह सकत। कखैन केना कऽ परगट हएत आ कखैन लुप्त भऽ जाएत, कहनाइ कठिन। ओ अपना अनुरूपें नाच नचबैत रहैत अछि। आ बेकती अपनाकेँ बिसैर नचैत रहैत अछि। सबहिं नचावत सुआरथ गोसाँइ।

“सुनि ले राजेसर! अपन गप्प कहैमे डेरा जेबही तँ जुलुम भऽ जेतौ।”

“हँ, उनटे मखनाकेँ जरिमाना लगि जेतइ।”

“डेरेतै किएक? कोनो की कोइ बाघ छिऐ।”

"हँ, अखनीसँ धाक टुटल रहतौ तब ने मुखिया पदसँ लड़बीहीं।"

"हे रौ, ओहो सभ कोनो काला पहाड़ नै छिऐ। छूच्छे हवा-पानि देने रहै छइ।"

"रौ, अपना सभ गरीब छिऐ तँ की कण्ठ मोंकि देतइ।"

"हौ, राजेसरकेँ बजैक छमता छइ। के एकरा गप्पकेँ काटि सकतै?"

"चलू बहादुर डर नै राखू।

पाँछा छी हम सभ तैयार।"

"रौ, एना राजेसराकेँ गरपर नै चढ़ाबीही,चारि दिनक बादक तँ सभ कमाइले बाहर चलि जेबही आ बेचारा असगरे सबहक चोटपर चढ़ि जेतइ।"

"अखनी की नजैरपर नै चढ़ल छै, केतेक बेर मुँहपुरखा सभकेँ मुहेंपर गारि-बात देने छइ। लाठी चमकौने छइ। ओ सभ छोड़ि देतै?"

"सएह हौ, गरीबक एकता आ बालुक बान्ह। हौ काका, एके धक्कामे चारि फक्का। केतेकोकेँ तँ चढ़ौआ छागर बना कऽ परान लेलहक आ ऐबेर...।"

"चुप रह, मौगा-मरद अहिना बजै छइ।"

"ठीके, ओकरा सबहक काजमे जे बारम्बार अड़चन करतै तेकरा...।"

"तरेतर राजेसरापर सभ गुम्हैड़ रहल छइ।"

"चुप, चूड़ी पीन्ह कऽ घरमे बैस रह। की करतै? गिर लेतै?"

आपसी घेंघौज शुरू भऽ गेल छेलइ। सभकेँ शान्त करबाक लेल राजेसरकेँ बाजए पड़ल-

"अहाँ सभ चिन्ता नइ करू। अन्याय नै हेतइ। हम जवाब देबै। चलू लगमे बैसै छी।"

गाछ तर पंच सभ बैस गेल छल। चारूभर तकैत प्रमुख पंच बजला-

"यौ, मलकेसर बाबू एला?"

"आबि रहल अछि।" नेंगराइत मलकेसर पहुँचल। ओ कुहरैत पटियापर बैस गेल।

"मखना कहाँ अछि यौ?"

"आबि गेलौं पंच साहैब। हम कोनो पछुआइबला मरद नै छी।"

मखना गमछासँ मुँह बन्हने छल।

"सभ गोटे तँ आबिए गेल आब शुरू कएल जाए।"

"रौ मखना, तूँ मुँह किए झँपने छेँ। उघारि कऽ देखा।"

मखनाक मुँह फुलि कऽ कुप्पा भेल छेलइ।

"पहिने तँ मलकेसरसँ पूछल जाए- जे की भेल छेलइ।"

"हँ-हँ, पहिने मलकेसरजी सँ पूछल जाए।"

धरमलाल आँखि नचबैत बाजल।

मलकेसर देह-हाथ सोझ करैत बाजल-

"यौ सरपंच साहैब, जन-मजदूरकेँ मने बढ़ि गेल छइ। तइमे लबका छौड़ा सभ तँ पानियोँ मे आगि लगबै छइ। देखियो ने, भोरमे हम जनकेँ हाक दइ छेलिऐ। मखना ओनएसँ आबि कऽ हमरा अधला बात सभ कहऽ लगल। हम ओकरा डाँट-डपट देलिऐ तँ ओ हमरा पथ्थलपर पटैक देलक। डाँड़ सरैक गेल अछि।"

"ई तँ जुलुम भेलइ। एहेन-एहेन डकलीलामी।"

-कुलानन्द आँखि उनटबैत बजल।

"चुप रहबै तँ अहिना कपारपर चढ़ि कऽ लगही करत।"

"नहि यौ, कसि कऽ डण्ड-जुरिमाना कएल जाए।"

"एहेन अगिमुत्ता सभकेँ तँ मुइलाह बापसँ भेँट करबा दइके चाही।"

"धड़फड़ नइ करियौ, कनी मखनोसँ बात बुझियौ। 'कुछ बुझा न समझा आ फरमा दिया फाँसी।' एना नइ करियौ।"

मलकेसरसँ राजेसर करजा नेने रहइ। सोचलक,राजेसर हमरे दिस बजत किने। तँए मलकेसर कुहरैत बाजल-

"मखनासँ पुछबै। ओ तँ अपने दिस बजत। राजेसरो ओहीठाम रहै, ओकरासँ पुछियौ।"

कुलानन्द फरकैत बाजल-

“रजेसरा किए बजतै? ऐ बीचमे ओकर बात किए मानल जेतइ?”

“किए नइ बजतै? ओ हमरा सबहक मुँहपुरुख छिया।”

“एकेबेर एना नै बजियौ। मलकेसरजी जँ अपने कहै छैथ जे राजेसर ओइठाम रहै तँ ओकर गप सुनए पड़त। कहि कऽ सुनाबह हौ राजेसर केकर गलती रहइ।”

राजेसर ठाढ़ भऽ कऽ बाजल-

“यौ पंच लोकैन! हम जे देखलौं से कहि दइ छी। ठीके मलकेसर बाबू जनकेँ जोर-जोरसँ हाक दैत रहथिन। तखैने मखना जोर-जोरसँ बोकराकेँ हाक दैत ओमहरसँ एलइ। मलकेसर बाबू खिसिया कऽ लाठीक हूराठसँ मखनाक मुँह फोड़ि देलखिन। पहिलुक गलती तँ मलकेसरे बाबूसँ भेलैन। बाता-बातीमे लाठी नै चलेबाक चाही। तैपर मखना बँचैले पाछूसँ टाँग पकैड़ घींच लेलकैन। चुट्टीओकेँ चीपबै तँ काटबे करत।”

मलकेसर खिसियाइत बाजल-

“मखना हमरा देख कऽ बक छू-बक छू करै छल हमरा गारि पढ़ै छल। ओकरा लग बकरी कहाँ रहइ।”

मखना फानि कऽ बाजल-

“बकरी हमरा हाथसँ छूटि कऽ भागि गेलइ। तँ हाथमे केना रहितै?”

“तूँ हमरासँ बोता बारेमे पुछलेँ किएक नहि? तब ने हाक दैतही।”

“आब लिअ। मूतबै आकि घरमे सुतबै। बजबै-भुकबै आकि नहि। पहिने मलकेसर बाबूसँ औडर लिअ पड़त। हे, आब ई जेठरैती नै चलत।”

“दाबी देखबैत अछि। जेना कोय गुलाम रहइ।”

कुलानन्द बाजल-

“हम तँ पहिने बुझैत रहिऐ जे रजेसरा सबहक मगज उनटा देतइ।”

“काज करै छी तँ मजदूरी भेटैत अछि। कियो मँगनी नै दइ छइ। राजेसरक सभ गप्प साँच छइ।”

"तँ की मलकेसरजी झूठ बजै छै? सभ तँ पंचे छिऐ। केकरा के रोकत। दुनू दिससँ भारी घेंघौज शुरू भऽ गेल छेलइ।"

"कोय धनीक अछि तँ अपना-ले अछि। कमाइ छी तँ ठाठसँ खाइ छी। केकरोसँ माङऽ नै जाइ छिऐ। दाबी कथीक देखा रहल अछि।"

"तँ तोरा सभ गामसँ उजारि देबहक। बुढ़-पुरानकें परतिष्ठा घिना देबहक।"

गमछा कपारमे बान्हैत एक-गोरे फनकल-

"झगड़े-लड़ाइ करैक विचार छौ तँ फरिया ले।"

"हे मुँह सम्हारि कऽ बात कर। एनए कोइ कमजोर नइ छइ।"

परभुदास गामक संत छैथ। हाँ..हाँ... करैत ओ आगू एला।

"कहू जे ई पञ्चैती छिऐ आकि युद्ध। पञ्चैतीमे जँ अन्याय हेतै तँ हजारो समस्याक जनम भऽ जेतइ। देखलिऐ कहियो लड़ाइ-मारिसँ विकासक काज होइत? गामक संस्कारकें एना नै बिसरू। बात आगू बढ़त तँ सभटा राखल-उसारल धन पानि जकाँ बोहि जाएत।"

लबराकें नहि रहल गेलइ। बिच्चेमे टपैक उठल-

"रौ भाय बगरा
नहि कर झगड़ा।
खोंताक बच्चा
सेहो छौ कच्चा
सेवलहा अण्डा
सेहो हेतौ गण्डा।
मन थिर कर
नहि तँ हेतौ वितण्डा।"

ताल ठोकैत फेर बाजल-

"आबि जो फरिया ले
नहि तँ गरिया ले।

तूँ उनचास
तँ हमहूँ पचास।
रौ भाय बगरा
हम छी लबरा।"

केते गोटेकेँ हँसी लगि गेलइ। लोक सभ किछु शान्त जकाँ भऽ गेल छल।

"यौ सरपंच साहैब। बात बिगड़ल जाइत अछि। एना नहि हएत।"

"ऐठामसँ पाँच पंच उठि कऽ बाहर जाउ। एकान्तमे विचार करू। आ फैसला सुना दियौ।"

"ठीक छै सएह कएल जाए।"

"देखलीही बँचा लेलियौ।"

"हमरा की बँचाएब ओकरा बँचा लेलिऐ।"

पञ्चैतीसँ पाँच पंच बाहर निकैल गेल छल। निर्णए की होइत की नहि। सबहक धियान ओम्हरे चलि गेल छेलइ। आपसी कनफुसकी शुरू भऽ गेल छेलइ।

लालकान्त पाछूमे बैसल छल। उचित अवसर देख आगू आएल आ ठाढ़ भऽ बाजए लगल-

"यौ पंच भगवान! हमरा एकटा पञ्चैती कऽ दिअ।"

झपसूलालक देह सिहैर गेल छेलइ। कातेसँ टपैक उठल-

"अखनी दोसर गोटेक पञ्चैती नइ हेतौ।"

लालकान्तक आँखि ललिया गेल छेलइ।

"किए ने हेतै? पञ्चैतीए करैले ने पंच सभ बैसल छैथ। तूँ रोकनिहार के?"

बात आगू बढ़ितै तइसँ पहिने एकटा पंच बाजल-

"अच्छा झगड़ा नै करू। बाजह हौ लालकान्त,की बात छै?"

"की बजबै यौ पंच साहैब। बजितो लाज होइए।"

“बजबहक नै तँ बुझबै केना?”

लालकान्त नजैर उठा कऽ झपसूलाल दिस देखलक आ बाजल-

“पुछियौ झपसूकेँ जे अधरतियामे हमरा अँगना कथीले गेल रहए?”

झपसू बातकेँ काटैत बाजल-

“देखियौ, केकरा ऐठाम के नहि जाइ छइ।”

लालकान्त आँखि गुड़रैत बाजल-

“झपसू, तूँ हमरा बातमे टोक नै दऽ सकै छेँ। हम पुछै छी- अधरतियामे हमरा अँगना की करैले गेल रहए?”

“कोनो चीज चोरा लेलियो? हम कोनो चोर छी?”

“की करैले गेल रही?”

पंच टोकलक-

“जवाब दहक झपसू। कथीले गेल छेलहक?”

झपसू छीना काटैत बाजल-

“हमर अँड़िया बछा रातिमे खुलि गेल रहए। तेकरे ताकैले गेल रहिऐ।”

लालकान्त तामसे ठाढ़ भऽ कऽ बाजल-

“रौ झपसू, झूठ किए बजै छेँ। पंचक सोझहामे..। बजर खसतौ।”

“तँ तोहीं कहऽ जे साँच की छै?”

“तूँ हमरा स्त्रीकेँ किए सोर पाड़ैत रही?”

“झूठ गप्प। तोहर पत्नी स्वीकार करतौ ई बात। ओ तँ साँझोमे हमरे अँगनामे बैसल रहौ। कहै छेलौ हमरा खेतमे हर जोति दिअ।”

“हमरा इज्जतकेँ उघार करबेँ। देखबीही?”

“देखबै की? तोरासँ हम कमजोर थोड़े छी।”

पंच रपटैत बाजल-

“अहाँ सभ मुँहकेँ बन्न करू।”

मनधत्ता धड़फड़ाइत पहुँचल आ जोरसँ हल्ला करैत बाजल-

“हौ जुलुम भऽ गेलै हौ।”

“की भेलै हौ?”

मनधत्ता राजेसर दिस ताकैत बाजल-

“रौ रजेसरा तोहर भाए जागेसर दुनियाँसँ चलि गेलौ रौ।”

“केना भेलै हौ।”

मनधत्ता कानैत बाजल-

“हौ, हम आ जागेसर एके नाहपर चढ़ि धार पार करैत रहिऐ। धारमे बाढ़ि आएले रहै। नाह डुमि गेलइ। केतेक-गोरे डुमि कऽ मरि गेलइ।”

“तूँ केना बचलीही?”

“हमरा एकटा नहवरिया छानिकें ऊपर केलक। केतबो तकलिऐ जागेसरक लहाशकें, केतौ ने भेटल।”

मनधत्ता फेर कानए लगल।

किछु कालक लेल सभकें जेना बघजर लगि गेल होइ। नि:शब्द...।

सभकें आँखिक सोझहामे जेना जागेसरक मुखाकृति नाचि उठल...। जेना एक-एकटा ओकर गुण मन पड़ि आएल होइ।

मुइलासँ पूर्व लोकमे दोष-गुण केतबो होइ मुदा मुइला उपरान्त लोककें ओकर गुणे बेसी स्मरण होइ छइ। जेना सभटा अवगुण मृत्यु अपना संगे नेने चलि जाइ छइ।

तइमे गौआँ-घरूआकें जागेसरसँ बेसी फैदे भेटल छेलइ। हरक्षण दसगरदा काजले तैयारे। केकरो ऐठाम कोनो कठिन समस्या आबि जाइ छेलै तँ राति-बिराति हौउ चाहे पानि-पाथल झहरैत हौउ, जागेसर ओइठाम तत्काल पहुँच जाइ छेलइ। कहियो समाजकेंओकरासँ हानि नइ भेल छेलइ। एहेन लोकक मृत्युसँ सबहक आँखि नोरा जाएब सोभाविके...।

किछु-गोरे एक-दोसरक मुँह ताकि रहल छल आ किछु-गोरेक आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छेलइ।

मुदा किछु एहनो बेकती होइ छै जेकरा अनकर उन्नतिसँ दुख होइ छइ। अपना दिस धियाने नहि रहै छइ। ओइठाम किछु एहनो लोक छल जे मुँह नेरौने दुखितक नाटक कऽ रहल छल।

राजेसर सभसँ कातमे बैस गेल छल। ओ निरंतर उत्तरेमुहेँ ताकि रहल छल। जेना आँखिमे असीम पीड़ा भरि गेल होइ। भीतरे-भीतर औनाइत दुखक धुइआँ। मुहसँ बोल नै फुटै छेलै मुदा कुहैर रहल छल। 'मिले न जगत सहोदर भ्राता।'

राजेसरपर लोकक धीरजभरल शब्दसँ कोनो परभाव नहि पड़ि रहल छेलइ। ओ असथिरेसँ उठल। बुझेलै टाँगमे कोनो शक्ति नइ अछि। तैयो धीरे-धीरे घर दिस टाँग बढ़ि रहल छेलइ।

मलकेसर ठाढ़ होइत बाजल-

"रौ तँ हमर पञ्चैती केना हेतै?"

कालीकान्त रपैट कऽ कहलक-

"ईह, ओनेए वेचारापर दुखक पहाड़ खसि पड़लै आ एकर पञ्चैती हुसल जाइ छइ।"

सरपंच ठाढ़ होइत बजला-

"अखनी पञ्चैती नै हएत। वेचाराकेँ जुआनी मौत भऽ गेलइ। पहिने पाँच गोटेजाउ आ धारक कातसँ जागेसरक लहाश ताकि-हेरि कऽ लाउ। अन्तिम संस्कार कएल जेतइ।"

एकाएकी सभ विदा भऽ गेल छल। राजेसरक अँगनासँ कनबाक स्वर आबि रहल छेलइ। रातिक अन्हार जेना आरो सघन भऽ गेल छल।

◌

7.

धारक कछेर। पसरल बाउल। केतौ-केतौ कास-पटेरक झाड़-झाँखुड़। ओहीठाम राजेसर ठाढ़ भेल छल। बताह सन दशा। सोचि रहल छल।

‘सभ किछो अछि ओहिना,

जहिना छल तहिना।

मुदा ई की भेल,

हमरा लेल, सभ किछु बदैल गेल...?

संगे आएल गौआँ सभ जागेसरक लहाश ताकि-हेरि रहल छल।

चारूभर अगाध बालुका-राशि। केतौ हरियरीक लेश नहि। जेना नदी उजरका साड़ी पहिरने होइ। कात-करोटमे केतौ किछु नै। जेना नदीक नोरसँ सभ किछु दहि-भँसि गेल होइ। चहुँओर पसरल सुन-मसान, ने कोनो बोली ने कोनो गान।

राजेसर सोचलक- एहने दशा आब हमरा भौजियोकेँ होएत। अहिना विधबा स्त्री जकाँ उजरा साड़ी पहिर, आँखिसँ नोर बहबैत, पहाड़ सन जिनगीकेँ नपैत-जोखैत...।

अकुलाएल मनकेँ बहटारैले कनी आगू बढ़ल मुदा फेर ठमैक गेल।

यएह तँ ओ जगह छी। अहीठाम जागेसर भैया कहने रहैथ-

“हौ बौआ, जागि-बेरागि कऽ सुतिहऽ। घरो काते-करोटमे आ रातियो अन्हरिये। बुझिते छहक गामक गेल आ निन्नक सूतल। हमरा बेसियो समए लगि सकैत अछि।”

बेसी समए की लगतै ओ तँ सदा-सदाक लेल छोड़ि कऽ चलि गेला। जेना बोली, बानि, क्रियाकलाप द्वारा मृत्यु समैसँ पूर्वे सूचना दैत रहै छइ।

राजेसर डबडबाएल आँखिकेँ पोछि लेलक।

छीटपर मुँह उठौने- नाहक भग्न अवशेष। लगै छेलै जेना गोहि शिकारकेँ पकड़ैले लक लगेने होइ।

भविसक बोझ जेना राजेसरकेँ दबने जा रहल छेलइ। मन तरे-तर काछुर काटि रहल छेलइ। माथासँ घामक टघार चूबि रहल छेलइ। ओ धड़फड़ाइत धारक पानि दिस बढ़ि गेल।

“एना धड़फड़ीमे कोनो काज नै करी। आब तूँ जुआन भेलह।”

जेना केतौसँ भाइक स्वर ओकरा कानसँ टकरेलै। आशासँ भरल ओ चारूभर चकोना भेल। मुदा केतौ किछु नै देखा रहल छेलइ। जेना अन्तरमे किछु उधुक्का मारलकै। ओ हिया फाड़ि कऽ कानए लगल।

भाइक संग बितौल एक-एक क्षण मन पड़ि रहल छेलइ। जेकरा परतापे ओ ने डेराइत छल आ ने करवनो चिन्तित होइ छल। मुदा आइ ओकरा बुझाइ छेलै जे ओ असगर भऽ गेल अछि। विल्कुल बेसहारा। सभ किछु बदलल। मन खाली खाली सन। माथपर हाथ लेने ओहीठाम बैस गेल। भविसक भूत सभ आगूमे नाचए लगलै।

केतबो ताक हेरि केलक मुदा लहासक केतौ अता-पता नै चललै। गौआँ सभ असोथकित भऽ कऽ राजेसर लग बैस रहल छेलइ। भूख-पियाससँ सबहक मन आँटो-आँट भऽ गेल छल। कछमछी लगल छेलै मुदा जाएत केना। समाजिक भारसँ घेराएल छल।

कालीकान्त कातेमे बैसल छल, एकगोरे पुछलकै-

"यौ कालीकान्त बाबू, आब कोन उपाए लगतै? दाह संस्कार केना हेतै?"

गमछासँ मुँह पोछैत कालीकान्त बजला-

"आब मरलाहा संगे मरि जाएब से हएत। एते तका-हेरी केलौं मुदा लहाशक केतौ पता नै लगल। साइत धारक पेटमे चलि गेल।"

"उपाए की हेतौ यौ?"

"एहेन स्थितिमे तँ कुशपुतर बना कऽ दाह संस्कारक बेवस्था होइ छेलइ। गामपर चलह। जाति-समाजसँ पुछि लिहक। जेना कहतह तेना करिहऽ।"

"तँ आब चलबाक चाही।"

"हँ, दुपहरिया बीतल जा रहल छइ। आ बाट केहेन अछि से बुझिते छहक।"

मुदा राजेसर किछो नै सुनलक। जेना ओ गप-सप्पसँ बहुत दूर छल। सोचक सागरमे निमग्न। मुँहपर पीड़ा नाचि रहल छेलइ। चुपे-चाप अपनहि नोरकेँ पी रहल छल।

कनी काल तक कालीकान्त ओकरा मुँह दिस तकैत रहला। जेना अपना आँखिसँ राजेसरक हृदैक पीड़ाकेँ नापैत होइ। मुदा आनक पीड़ा आन नहि जान। दुखक पसरैत छाँहकेँ कालीकान्त देख रहल छला। ओ राजेसरक बाँहि पकैड़ हिलबैत बजला-

"रौ राजेसर, एना बौराएल किए छीही। तोरेपर तँ आब पलिवारक सभटा भार छौ। एना जँ करबीही तँ पलिवारक आन लोकक की दशा हेतौ। मनकेँ थीर कर। ऐठामसँ उठ। चल गामपर।"

राजेसर उठैक कोशिक केलक। मुदा टाँग थरथराए लगलै। सौंसे शरीर केराक भालैड़ जकाँ डोलैत रहइ। आँखिक आगू अन्हार। ओइ अन्हारमे लाल-पीअर रेखा...। ओ लुद दऽ बैस रहल।

कालीकान्त समझबऽ-बुझबऽ लगला-

“रौ, संसारक चक्र अहिना चलै छइ। जे ऐ मृत्युभुवनमे आएल अछि ओकरा एक दिन ऐठामसँ जाए पड़तै। जन्म आ मृत्यु होएब तँ लीला अछि। ऐ लीलामे मनुखकेँ अपन-अपन काज करए पड़ै छइ। भागि कऽ केतए जेबही? लीला केकरा बुत्ते रूकत। राजा, रंक, फकीर कोय मृत्युसँ नहि बँचि सकैत अछि।”

संत परभुदास लगमे आबि कऽ बाजल-

“यौ सदा न फूलै तोड़ी, सदा न सावन होय।

सदा न जौवन थिर रहे, सदा न जीबे कोय।

जे ऐ संसारसँ चलि गेल से आपस नै आबि सकैत अछि। सभगोटे मिलि कऽ कानब तैयो घूरि कऽ नै आउत।”

राजेसर नोर पोछैत बाजल-

“हे यौ, अहूँ सभ ठीके कहै छिऐ। मुदा सभ किछुकेँ एकटा समए होइ छइ। समैसँ पहिने एहेन बेथा भऽ जाएत से कहियो मनमे नै आएल रहए। अहीं सभ सोचियौ, पलिवारक भार, धिया-पुताक भार आ भौजीक दशा देखै छिऐ तँ मोन होइए जे हमहीं मरि जैतौं से नीक होइत।”

परभुदासकेँ बजए पड़लै-

“जिय बिनु देह नदी बिनु वारि,

वैसहिं नाथ पुरुष बिनु नारी।

ओकरा तँ ठीके भारी विपैत पड़ि गेलइ।”

कालीकान्त सम्हारैत बजला-

“से तँ हमहूँ सभ बुझै छिऐ जे जुआनीक मौत बड़ अधला। मुदा की करबहक। ऊपरबलाक जे इच्छा छेलै से भेलइ। ओइ सर्वशक्तिमानक सोझा केकर वश चलतै। संतोष तँ करइ पड़त।”

किछु काल सभ कियो गुम पड़ि गेला। जेना एक-दोसरक पीड़ाकेँ नापि-जोखि रहल होथि।

कालीकान्त ऊपर मुहेँ तकैत बजला-

"चलह, बड़ बेर भऽ गेलइ। आगूक गप्प गामपर सोचल जेतइ।"

परभुदास पाँजमे पकैड़ राजेसरकेँ ठाढ़ केलक आ बाजल-

"मनकेँ थिर करह आ डेग उठाबह।"

"होहिं वही जो राम रचि राखा।"

आगू राजेसर आ पाछूसँ गौआँ सभ मुँह लटकौने विदा भऽ गेल छल।

मनुखक हृदैमे दुख सहबाक असीम क्षमता रहिते अछि। केहनो भारी दुखकेँ रसे-रसे सहि लैत अछि।

राजेसर सोचि रहल छल आ उड़ैत धूराकेँ देख रहल छल। पता नै लगि रहल छेलै जे हवा संगे धूरा अछि आकि धूरा संगे हवा। मुदा धूराक मध्य बनैत आकृति तुरन्तेमे बिगैड़ जाइ छेलइ। ओइ बनैत आकृतिक मध्य राजेसर अपनाकेँ तकैत-तकैत हेरा गेल छल।

◌

8.

भोरेसँ चारूभर अनघोल भऽ रहल छल। पुरुखमे आपसी चरचा आ स्त्रीमे फुसराहैट। पूरे गाम दलमलित। लोक सभ गामपर सँ ससरल जा रहल छल। चुपेचाप, अनठौने।

गाम-घरक कोनो घटना बड्ड तेजीसँ पसरैत अछि। जेना आगिक कुकुआहा एक घरसँ दोसर घरकेँ अपना लपेटमे लैत बढ़ैत अछि। तहिना एक कानसँ बियाबान, सबहक पेटमे बात थोड़े पाचै छइ। केते-गोरेकेँ तँ पेटमे बात बसात जकाँ औनाए लगै छइ। जँ जल्दी नहि निकलौ तँ...।

कालीकान्त अपने दलानपर ओंगठल छला। धिया-पुता ओकरा देहपर लटकल छल। किन्तु ओकर धियान ओइ औरतियाक गपपर छेलै जे लगेमे बैसल छेलइ।

केतेको गप पंचकेँ एकान्तीमे कहल जाइ छइ। खुशामद आ पैरवी केलापर पंचो न्याय-अन्याय करैले तैयार भऽ जाइ छइ। जखैन पैरवी केनिहार पंचक मनोनुकूल हुअए तखैन तँ...।

कालीकान्तकेँ किछु एहने सरस गप औरतिया सुना रहल छेली। तखैने सरपंच साहैब आबि गेला। कालीकान्तक आँखिक इशाराकेँ औरतिया बुझि गेल। ओ चट-दे नुका कऽ कोनटामे ठाढ़ भऽ गेल।

कालीकान्त खखसैत कनी जोरसँ बजला-

“यौ सरपंच साहैब, भोज-काजक इन्तिजामे राजेसरकेँ दिक्कत भऽ रहल छइ। कनी ओम्हरो धियान दियौ।”

सरपंच साहैब ठमकैत बजला-

“यौ, ओनए गाम दलमलित भेल छइ। अहाँकेँ भोज छूटि रहल अछि। अहाँकेँ तँ धियाने दोसर दिस अछि।”

चकित होइत कालीकान्त बजला-

“हमरा किछो पता नै अछि। की भेलै से?”

“लरेनाक स्त्री बीख खा लेलकै, रातियेमे मरि गेलइ। थाना खबैर पहुँच गेल छइ। थोड़े काल मे दरोगा गामपर पहुँचत।”

“नेता लरेना ऐठाम यौ?”

“हँ यौ, अहीबेर तँ सभ नेतपनी घोंसड़तै।”

“यौ नेता फनकबाज छइ। केहेन-केहेन अफसरकेँ मुट्ठीमे रखने छइ। देखै दिऐ जे बड़का लोकक गाड़ीकेँ हाथक इशारासँ रोकि दइ छइ।”

“धूर ई कोन बड़का बात छइ। घूसखोरसँ काज करबौनाइ तँ सबसँ असान...।”

“नइ यौ सरपंच साहैब। ओना जे कहियौ मुदा नेतबा छै बड़ा सोरसियल।”

“जँ सोरसियल अछि तँ मुखिया जीक कथी लऽ पमोजी करैत अछि।”

“की करतै अपना बुते नै सम्हरल हेतइ।”

“तब कोन सोरसियल भेलै?”

“अखनी केतए अछि नेता?”

“साइत डागदर संगे फदर-फदर कऽ रहल अछि।”

“डागदरकेँ देखै छी पछिम मुहेँ जा रहल अछि।”

“पूछताछसँ बचबाक लेल केतौ चलि देने हएत।”

“यौ सरपंच साहैब, अहूँ तँ साइत ओही डरे ससरल जा रहल छी।”

“नै यौ, हम तँ पूबरिया बाधक खेत देखैले जा रहल छी।”

तीन-चारिटा जुबककेँ जाइत देख दुनुगोरेक धियान ओनए चलि गेल। पढ़ल-लिखल बेरोजगार युवक सभ छुट्टीमे गाम आएल छल। आपसमे गप लड़बैत चौक दिस जा रहल छल।

“एकटा गप नै बुझलिऐ यौ। लरेनाक स्त्री बीख खा लेलकै आकि अन्न-पानिक संगे खुआ देलकै?”

“खेलकै आकि खुआ देलकै, जे भेल होइ। मुदा मरि गेल से तँ साँच छइ। एकर दोखी तँ लरेना आ ओकर पलिवारे भेलइ।”

“जँ अपने खेने होइ तब केना कऽ दोखी हेतै?”

“परिवारमे तँ परोछ रूपसँ तेतेक दुख आ कष्ट दइ छइ। बारम्बार प्रताड़ित करै छै जे महिलाकेँ बेवस भऽ कऽ आत्महत्या करए पड़ै छइ। जँ एहेन परिस्थिति पैदा केने होइ तँ दोख केकर भेलै?”

“ठीके, पुरान विचारक लोक सबहक नजैरमे महिलाक कोनो मोल नहि छइ। ओहन लोक हरदम महिलापर दाब-चाप देखबैते रहै छइ।”

“ऐ शोषण आ अत्याचारक कारणे केतेक उपद्रव होइ छै आ समाजो पछुआ जाइ छइ।”

युवक सबहक गप सुनि कालीकान्त तमसाइत बजला-

“अपना सभकेँ देख कऽ केहेन अँतड़ीमे लगैबला बात बजै छइ। सुनै छिऐ आकि नहि?”

सरपंचो साहैब तमसाइत बजला-

“सुनबै की, ई सभ गाममे केकरो मनुख बुझै छइ। ई छौड़ा सभ अपनाकेँ सभसँ बड़का काबिल बुझै छइ। आ जाने छै ढोंढ़क मनतरो नहि।”

मखना कम पढ़ल-लिखल रहितो देश-विदेशक बात बुझै छल। ओ बाटक कातमे ठाढ़ भेल सभ गप सुनि रहल छेलइ। नै रहल गेलै तँ बाजल-

“ई सभ किछो नहि बुझै छै तँ आइ.ए; बी.ए. पास केना केलकै यौ?”

कालीकान्त नै बजला मुदा सरपंच चट-दे लोकैत बजला-

"रौ, परीक्षा पास केनेसँ कियो काबिल नइ भऽ जाइ छइ।"

"तब कथी केलासँ होइ छै?"

कालीकान्तकेँ बजऽ पड़लै-

"बड़ काबिल छै तँ एना बौआएल किए घुरै छौ। कोनो नीक नोकरी करितौ ने।"

"अहाँ नोकरी केनिहारकेँ काबिल बुझै छिऐ। ईह! ई कहियौ जे हमर बेटा नै पढ़लक तँए मने-मन जरै छी।"

"हमरा सभ किए जरबै। कोय अपना बरदकेँ नाङैरेमे नाथत ओइसँ लोककेँ की बिगड़तै।"

सरपंच साहैब बातकेँ आगू बढ़बैत बजला-

"हे यौ, दू साल जँ उपजा नै होइ तँ सभ नवावी घोंसैर जेतइ। उपजा जँ होइत रहै तँ पढ़ौनाइ कोन बड़का बात छइ।"

मखना पट-दे बजल-

"जँ एतेक सस्ता गप छै तँ अहूँ अपना बेटाकेँ पढ़ा लैतौं किने।"

सरपंच साहैबकेँ जेना भीतर तक छूबि देलकैन तँए ओ गुम्हड़ैत बजला-

"ई छौड़ा सभ अकासेपर चलता। हे रौ, तोरा कोइ बजेने छेलौ जे लबर-लबर करै छें?"

कालीकान्त फटकारैत बजला-

"हे रौ, तूँ ऐठामसँ जेबें की नहि।"

"जाएब किए नै। साँच बात अहिना लगै छइ।"

"ई किएक जाएत हमहीं चलि जाइ छी।"

कहैत सरपंच साहैब तेजीसँ बाध दिस विदा भऽ गेला। पदचापसँ निकलैत क्रोध! जोड़ लगैत परबा डेरा गेल आ फड़फड़ाइत उन्मुक्त अकास दिस उड़ि गेल।

मुदा सरपंच साहैबक धियान ओमहर नै छेलैन। ओ अपना मनसँ लड़ैत बढ़ल जाइ छला।

◌

9.

गाम कनी शान्त जकाँ भऽ गेल छल। तैयो लोक मने-मन डेराएले छल। भितरिया डर निकैल जेना असान थोड़े छइ। ओ तँ भीतरे-भीतर कुही करैत रहै छै आ थकुचल जिनगी चलैत रहै छइ। संगे हहास मारैत सभ किछकेँ झँपने बढ़ैत रहै छै, बहादूर सभ।

ओना अही बीचमे तीन-चारि बेर थानेदार आएल छल। मुदा केकरोपकैड़ नै पौलक। घटनोक दिन सिपाहीक एलासँ पहिनहि लहास जरि गेल छेलइ। मुदा जरलोहो हड्डी सिपाही सभ बीछि कऽ नेने गेल छल।

डर तँ सभकेँ बनले छेलै जे केकर नाम दारोगाक डायरीमे नोट छै आ केकर नहि। एहने समैमे लोक सभ मनमे सैंतल दुसमनी सधबैत अछि। ऐ कारणे सभ मने-मन आतंकित।

साँझ पड़ैमे किछु पल शेष छेलइ। गोसाँइ डुमानी-बेर। राजेसरक दुआरिपर लोक सभ जमा भऽ गेल छल। आइए जागेसरक सराधी भोज छेलइ।

ओना राजेसरक स्थिति भोज करबाक जोग नै छल परन्तु सर-समाजक उड़न्ता गप सुनलकै। कोइ सोझहामे तँ कोइ परोछमे। वेवश भऽ कऽ भोज करए पड़लै। जाति-समाजसँ भागियो तँ नै सकै छल।

लोक सभ लोटा लटकौने पैछला भोजक चरचा करैत आबि रहल छल। राजेसरक दुआरिकेँ खरड़ासँ साफ कएल गेल छेलइ। एक-गोरे कुकुर आ कौआकेँ लाठीसँ भगा रहल छल।

किछु भोजक पंच सभ कोणटामे ठाढ़ भऽ कऽ गप लड़ा रहल छल।

“दुआरि नीकसँ साफ नै केलकै। हौ, सकरता नहि छेलै तँ कथीले भोज केलकै।”

“हे यौ, की कहब कण्ठ मोकि कऽ भोज लेलकै। किछ मुँहपुरुखा सबहक विचार भेलै जे ऐ भोजमे एकरा डाँड़ तोड़ि दहक। सभ नेतागीरी अपने छुइट जेतइ। जन-मजदूर पाटी लऽ कऽ बड़ी जोरसँ गरजैत रहै छइ। भोजमे करजकेँ बोझ पड़तै आ ओकरे सधबैत जिनगी बीत जेतइ। मुखिया बनबाक सपना कहियो पुरा नहि हेतइ।”

दोसर-गोरे बाजल-

“हौ, जे भोज नै करए से दालि खौब सुड़कए। लोगक ऐठाम जे भोज खेने छै से करजा कहिया सधौते। भोज नहि करतै तँ उद्धार केना हेतै?”

“हँ, हँ...। भोज तँ सभकेँ करबाके चाही। आखिर मुक्ति केना मिलतै।”

“हँ यौ, समाजोक तँ एकटा निअम-काइदा छै तेकरा तोड़बाक नहि चाही।”

“एना पुरान लकीरक फकीर बनल रहब तँ मरैत रहू ओही तरमे आ लदने रहू। बचबाक अछि तँ परिवर्तन करू।”

“झगड़ा नै करू। बैसैले चले-चलू।”

जातिक मानिजन हाथमे लोटा नेने पंच सबहक बीचमे आबि कऽ बाजल-

“की यौ, सभ-गोरे आबि गेलौं?”

मलकेसर टाँहि दऽ बाजल-

“हमरा सभ ठीकेदारी नेने छिऐ- सबहक। जे नहि आएल से पाछू खाएत।”

“हँ, ठीके छइ। सभ किछो तैयारे छइ। बैसू पाँतिसँ।”

सुनिते, सभ-गोरे चटाचैट बैस गेला।

लरेना नेता कातेमे ठाढ़ भऽ कऽ सरपंच साहैबसँ कनफुसकी कऽ रहल छल। गप सुनैले डाक्टर लगमे सहैट कऽ गेल।साधारण दुख-बेमारीक इलाज अंगरेजी जानै छल तँए गामक लोक ओकरा डाक्टरे साहैब कहै छेलइ। लरेनाक स्त्री जखैन मरैत रहै तखैन डाक्टरोकेँ बजौल गेल रहइ। मनमे डर पैसल रहै जे कहीं मोकदमा मे नाम ने पड़ि गेल हुअए। शंका समाधान करैले लरेनासँ पुछलकै-

“की यौ नेताजी, केशक की हाल छै?”

डेराएल रहलाक कारणे नेता मिरमिराइत बाजल-

“अखैन तँ ठीके छइ। दरोगाजी किछ डिमण्ड केने छइ।”

“यौ, सौस-ससुरसँ मिलानक गप करू। ठीक रहत।”

“देखियौ तँ आगू की होइ छइ।”

सरपंच साहैब बैसल लोक दिस नजैर उठबैत बजला-

“यौ भात परसल जा रहल छइ। कोनो नीकठाम अपनो सभ बैसू।”

पंच सभ पाँतिमे बैस गेल छल। बारीक सभ भोज्य पदार्थ परसैत अपसियाँत। भात-दालि, तीमन-तरकारी, पापर-अँचार आ चटनी।

लोक सभ भोजनक सुआद लऽ रहल छल। लरेना नेता किछ बाजए चाहलक तखैने मनधत्ता दौगैत आगूमे पहुँच गेल। मनधत्ता चौकपर साग-सब्जीक छोट-छीन दोकान करैए। ओ अपसियाँत होइत लरेनाकेँ कहलक-

“यौ नेता, जल्दी भागू नहि तँ पकड़ा जाएब। दरोगाजी एक दरजन फौरसक संग आबि रहल अछि।”

लरेना फानि कऽ ठाढ़ होइत पुछलक-

“कोनेसँ रौ?”

“पछिमसँ गाम लग आबि गेल अछि।”

लरेना अँइठे हाथे नुआँ समटैत पूबमुहेँ भागल।

कोइ कातसँ टाँहि दऽ बजल-

“चाहे छुटए संग साथ, नहि छोड़ी आगूक भात।”

लरेनाकेँ भागैत देख ओकर दियाद भेलवा आ पीअर बाबाक कान ठाढ़ भऽ गेलइ। भेलवा अपना बगलमे बैसल पीअर बाबाकेँ पुछलकै-

“हौ बाबा, नेतबा किए भागलै?”

पीअर बाबा मुँहक भात घोंटैत बजल-

“आबैत काल टीटही लगल रहइ। हमरा शंका होइ छौ। साइत पुलिस-दरोगा आबि रहल छइ।”

“साँचे हौ? अपनो सभकेँ पकड़तै?”

“हँ रौ, लहास जरबैमे तँ अपनो सभकेँ संग केने रहइ। केशमे नाम हेबे करतौ। सुनै छिऐ- थानापर बड़ पिटान करै छइ। जान नै बँचतौं। कोनो तरहेँ भाग ऐठामसँ।”

भेलवा हरमुठाह लोक। आगू-पाछू सोचैबला कोनो बुधि नै। डरसँ आँखि नोरा गेलइ। फनफनाइत ताकत घटि गेलइ। किछु दिन पहिने ओही गामक सुपड़िया चोरकेँ पकैड़ थानापर लऽ गेल रहै। राति भरि नंगी मरचायक मसालासँ ओकरा सेवा कएल गेल रहइ। ई गप भेलवाकेँ बुझले छेलइ। ओ मनेमे सोचलक- चण्डलबा जँ आइ हमरा पकड़त तँ नै जानि जे कोन दशा करत।

डरसँ ओकरा आँखिक आगू अन्हार भऽ गेल छेलइ। कोने भागत बाट सुझबे ने करइ। ओ सोझे पाँते दिस पड़ाएल। केतेक-गोरेक पातपर लात दैत,भातकेँ खिचाड़ैत मलकेसरक लग जा कऽ धाँइ-दे खसल। ओकर ठेहुन मलकेसरक मुहेँमे लगल। मलकेसर चितंगे खसल, मुँह पकैड़ बपराहैड़ काटए लगल।

लोक सभ हो-हल्ला करए लगला। भेलवाकेँ बुझेलै- साइत दरोगाजीआबि गेल।ओ फुड़-फुड़ा कऽ उठल आ लरेनाक पछोड़ धेने भागल।

मलकेसर कुहरैत उठल आ गरियबैत बाजल-

“के छेलै रौ सार, हौ बाप, जान नहि बाँचऽ दैत। किछ दिन पहिने तँ एकटा अगत्ती मखना डाँर सरकौने छल। आइ मुहोँ भंगठा देलक सार भेलवा।”

गरदा झारैत फेर बजल-

“हे रौ फतरिंगा सभ, सामरथी नै रहै छौ तँ बौहकेँ बीख खिया कऽ किए मारै छीही। हे रौ सार, रही घुरघुरा आ उखाड़ी बिचलाघर खाम्ह।”

भारी घोल-फचक्का होए लगल। ओही हल्ला-फसादक मध्य केतेक-गोरे ससरए लगल। जेकर केशमे नाम हेबाक शंका रहै ओ दोगे-दोग बिला गेल। पीअर बाबा पोखैर दिसक लाथ लगा विदा भऽ गेल। ओकरा पाछू डाक्टर साहैब गप लड़बैत चलि देलक।

पाँतमे जगह-जगह स्थान रिक्त भऽ भऽ गेल छल। बँचल लोक सभ भोज खा रहल छल। मुदा बीच-बीचमे ओइ खाली जगहकेँ देखैत कुता सभ आपसमे गुम्हरए लगल। जाबे लोक ‘हाँ-हाँ’करै ताबे कुकुर सभ पाँतमे ढुकि गेल। नष्ट-नष्ट कहि सभ-गोरे फानि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। धिया-पुता पातमे लात दैत भागि गेल। गधकिचन मचि गेल। किछसँ किछ बजैत लोक सभ घर दिस विदा भऽ गेल छल।

राजेसर दुआरिक कातमे ठाढ़ भेल छल। वेचारा केतेक करजा-बरजा करैत भोजक ओरियान केने छल। सेहो समाजकँ पाइठ नहि भऽ सकलै। ओकरा आँखिसँ दहो-बहो नोर खसि रहल छल। मुदा ओइ नोरकेँ देखैबला कियो नहि छल।

एक-गोरे बाजल-

“भोज की करत। जश नहि भेटलै।”

दोसर-गोरे टोनलक-

“ऐमे केकर दोख?”

रोजेसरक देह जेना काठ भऽ गेल छल। ओ शून्यमे निहारि रहल छल।

◌

10.

लोक सभ जा रहल छल- गहवर घर दिस। असनान केने हाथक डालीमे फूल-अछत,लड्डू-पान भरल। आइ भगतपर गोरैयाक सवारी हेतइ। ई बात सुनिते लोककेँ छुटलो दुख-बेमारी फेरसँ जेना उपैक गेलै, भीड़सँ तहिना लगै छल।

परिवारक पढ़ल-लिखल, नव लोक सभ रोकि रहल छल। 'ई पुरनका विचारकेँ छोड़ू। ओझहा-धाईममे फँसि कऽ रोगीक जान मारि देबइ।'

मुदा कोइ नहि सुनै छेलइ। ओकरो सबहक अपन तर्क रहइ।

'ईह, कहै छै जे- लव लव जोगीकेँ...। हौ, केतेक बेर तँ जे बेमारी डागदरसँ नै ठीक भेलै तेकरा ओझहा-धाईम ठीक केलकै। ओते टको-पैसा रहै तब ने ओते महग दवाइ कीन सकब। एने घरमे घिंचै छै मुसरी डन आ ओनए...।'

राजेसरो अपना भतिजाकेँ कान्हपरलाधने जा रहल छल- गहवरदिस। केतेक दिनसँ ओकर बेमार भातिज कौहैर काटि रहल छेलइ। आब तँ आँखियोक रंग बदलल सन बुझाइ छेलइ। साधारण दवाइ-विरोसँ कोनो असैर नै होइ छेलइ। ठीक ढंगसँ इलाज केना करत। टका-पैसाक बिल्कुल अभावे। टका तँ टटके भोजमे उड़ि गेल रहइ।ओ बुझै छल- जे ओझहा-धाइमसँ किछो नइ हेतइ। मुदा दोसर उपाए की करत। अभावक कारणे

नीक डागदरसँ इलाज केना होएत? वेवश भऽ गेल छल। ऊपरसँ माए आ भौजाइक अनुरोधकेँ केना टारैत।

बरिसोसँ बीनल जालकेँ तोड़नाइकी असान छइ। ओ तँ तेतेक मजगूत भऽ गेल रहै छै जे ओकरा तोड़ैत तोड़ैत बेकती स्वयं टुटि जाइत अछि।

गहवरक अँगनीमे सभ गोटे जमा भऽ गेल छल। एक कातमे भगैतिया सभ मिरदंग आ झालि लेने तैयार। भीड़मे स्त्रीगणक संख्या पुरुषसँ बेसी। बगलमे किछ गोटे हाथ जोड़ने थरथरा रहल छल। जेना तरे-तर कियो ओकरा सबहक देहेकेँ हिला रहल छेलइ।

बरिसोंसँ ठमकैत आ दौगैत बिसवासक आवरणकेँ विच्छिन्न करब की असान छै? ओकरा तँ मात्र हिलबै आ डोलबैले ज्ञानक जोरगर बसात चाही। नहि तँ चलैत रहत तरे-तर जेना मन्द पवनसँ डोलैत पात।

आइ गहवर घर चिकनि माटिसँ निपल-पोतल छल। एकटा कोनमे फूल-अछत आ दीपकक ढेरी। दूधक ढारसँ भीजल-चिपचिपाइत निचला भूमि।

धियान लगौने बैसल भगत। देवताक आवाहन कऽ रहल छल। भगतकेँ आँखि खुललै। एक चुरु गंगाजल देहपर छिट लेलक। आँजुर भरि फूल गहवर दिस चढ़ौलक आ फेर ध्यानस्त भऽ गेल।

मिरदंग आ झालि बजए लगल।

'तृंग धिग ध तृंग धी... ।'

भगैतिया सभ भगैत शुरू कऽ देलक।स्त्रीगणक गीत वायुपर चढ़ि आसमान दिस चलि देने छल।

"कोन दिन हे काली, तोरो जनम भेल
कोन दिन भेल छठिहार।
शनि दिन हे काली, तोरो जनम भेल
ओकरे छबे भेल छठिहार।

करिया कुकुरिया हे काली
बाटे सुतै छै डेढ़िया
चली गेल बिजुवन शिकार।
एक बने झोरलह हे काली
दोसर वने झोरलह
तेसर वने उठल शिकार।
हरिनो नै मारै काली तितिरो नै मारै
बीछि-बीछि मारै छै मयूर।
हकन्न कानै हे काली वनकेँ मयूरनी
बारि वयस हरै छैँ सिनूर।
जानो नहि मारबौ मयूरनी
परानो नहि हतबौ
पंखा लेबौ गोरैयाक सनेश
से हरने जेबौ सबटा कलेश...।”

भगतपर देवताक सवारी भऽ गेलइ। ओ देह-हाथकेँ ऐंठी-मोचार केलक आ मिरदंगक तालपर कुदए लागल। कुदैत-कुदैत ठाढ़ भऽ गेल आ हाथ उठा कऽ भारी अवाजमे बजल-

“हैत बाबू, सत्त जवाब पड़ै छह।”

लोक सभ चुप भऽ गेल छल। भीड़मे ठाढ़ भेल मुँहपुरुख सभ चटदनी आगू आएल। किछ-गोरे हाथ जोड़ैत बाजल-

“हौ महराज, कनी हमरो सभपर धियान राखहक। वाड़ी-फूलवारीकेँ असिरवाद देने जाहक।”

भगतकेँ मुहसँ कठोर शब्द निकलल-

“विनाश कऽ देबौ। अगराही लगा देबौ।”

मनधत्ता मुड़ी डोलबैत बाजल-

“बड़ खिसियाह छइ। कोन देवता छिऐ यौ?”

दोसर-गोरे बाजल-

“केतेक गनबहक। बेरा-बेरी सभ देवता औते।”

“हँ यौ, लोगे जकाँ देवतोक जनसंख्या तँ बढ़ले हेतइ।”

एक-गोरे कल जोड़ने थरथराइत आगूमे आएल-

“यौ महराज, एतेक किए खिसियाएल छिऐ?”

हाथ फड़कबैत भगत बाजल-

“तूँ सभ कोठा-सोफामे रहै छेँ आ हमरा-ले टुटली-मरैया। हमर ताल देखबीही?”

एके स्वरमे केतेको-गोरे बाजल-

“नहि यौ महराज, एना नै करियौ। गलती-कुगलती माफ करियौ। अहूँक घर बनि जेतइ।”

भरल बाटी दूध। भगत गट-गट पीबए लगल।

मखना कातमे चुक्की माली बैसल छल। आँखि निरारि कऽ तकैत बाजल-

“रौ तोरी-के, भगता सौंसे बाटी दूध पी लेलकै।”

मोचन लाठीक हुराठ ओकरा पीढ़ीपर लगबैत बाजल-

“बजैक होश नै छौ। कही ने जे बाबा छाँकी लेलकै।”

मखनाकेँ रीश उठि गेल छेलइ। ओ फोंफियाइत बाजल-

“बड्ड पकिया भगता छौ तँ हमरा मुठ्ठीमे की छै- कहि देतौ।”

“हे बेसी फट-फट नहि करी। जँ कहि देतौ जे तोरा मुठ्ठीमे गहुमन साँपक पोआ छौ। तब की हेतौ?”

“तइसँ की भऽ जेतै?”

“मुठ्ठीमे राखल चीज बदैल कऽ गहुमन साँप बनि जेतौ आ डँसि लेतौ। तब बुझबीही जे अरारि केलासँ की होइ छइ।”

“की हेतै? तू मरबहक?”

“हँ हौ, कहे भगता पुराबै देवता।”

किछ-गोरेक देह सिहैर गेल छल। केते-गोरे बिच्चेमे ठाढ़ भऽ गेल छल मुदा आँखि चारूभर घुमि रहल छेलइ। भलचनकेँ दूटा स्त्री छेलै तँए केते-गोरे दू बहुआ कहइ। ई गप्प सुनिते भलचनक देहमे जेना आगि लगि जाइ। तँए वेचारा कातेमे ठाढ़ भऽ सोचि रहल छल।

'पहिल स्त्रीमे धिया-पुता नहि भेल तँए ने दोसर स्त्रीसँ चुमौन करए पड़ल। ओकर जवानीक सुन्दरता देख लोक जरैए किए?

मुदा भलचनक मन आ देह बुढ़ा गेल रहइ। जवान स्त्रीक चलब-लड़ब देख मनमे हरदम शंका बनले रहइ।

होइत रहै छै मनमे बेवधान,

शक्ति, शंका आर समाधान।

आइ भलचनक लवकी स्त्री डाली लगौने छेली।

हल्ला–गुल्लाक कारणे लोक सभ उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल छेलइ। भलचनक लवकी स्त्री गमकौआ तेल लगौने बिच्चेमे ठाढ़ भेल छल। कुलानन्द सहटैत-सहटैत लग चलि गेल। ओभलचनक स्त्रीकेँ पाछूसँ सटि ठाढ़ भऽ गेल छल। अनठौने, अनबुझ्झ जकाँ दोसर दिस तकैत। बुझै जे भीड़मे के देखत। ओनए दुनूकेँ सटिया कऽ ठाढ़ भेल देख भलचनक पारा गरम हुअ लगलै। ओकरा बुझेलै- जे औरतियोकेँ यएह मन छै तब ने देहमे एतेक सटल छै आ किछो नहि बजै छइ। गमकौआ तेल लगबैक मतलब की?

भलचन तामसे थरथराइत लोककेँ ठेलैत-ठालैत अपना स्त्रीक लग चलि गेल आ लपैक कऽ ओकर झोंटा पकड़लक आ मुक्का दैत बाजल-

"गे बेहया, तोरा कोन बियाधि छुबने छौ। निकल ऐठामसँ नइ तँ गत्तर तोड़ि देबौ। तोरा की बुझि पड़ै छौ जे हम किछो नइ बुझै छिऐ।"

कहैत तरातैर चमेटा मारि रहल छल। कुलानन्दकेँ नहि रहल गेलै ओ भलचनकेँ कण्ठ पकैड़ पटैक देलकै। भलचन केंकिया उठलै। राजेसर सभ खेला देख रहल छेलइ। ओकरा बरदाससँ बाहर भऽ गेलइ। पाछूसँ गेल आ

कुलानन्दकेँ उठा कऽ पटैक देलकै। जाबे लोक हाँ-हाँ करै ताबे चारि चमेटा लगा देलकै। दुनुगोरेकेँ पकैड़ लोक सभ हाटोलक।

समाजक बीचमे कुलानन्दकेँ मारि लगि गेल छेलइ। ओकरा बुझाइ छेलै जे इज्जत उतैर गेल। बाघ जकाँ गुम्हड़ैत बाजल-

“रजेसरा,गौआँक सोझहामे जे हमर बेइज्जती केलही। एकर बदला हम लेबे करबौ। एहेन दशा करा देबौ जे इएह गौआँ-समाज तोरापर थूक फेकतौ।”

राजेसर बाजल-

“सुनै छिऐ यौ एकर गप्प। समाजक बीचमे एकटा बुढ़-पुरान बेकती मारै छेलइ। कुकरमी किरदानी केहेन करै छेलै, कहै छी- एकरा कहियौ, ऐठामसँ चलि जाएत नै तँ बात बढ़ि जाएत।”

“ऐबेर तोरा मुइलहा सभसँ भेँट करा देबौ। चिन्हले हमरा।”

कुलानन्द ओइठामसँ चलि देलक।

किछु लोक भलचन आ ओकरा स्त्रीकेँ शान्त केलक। लोक रंग-बिरंगक विचारमे डुबि गेल छल। अपन-अपन तर्क-विचार।

भगतजीक अवाज सुनिते लोक सभ शान्त भऽ गेल छल। एकाएकी गोहारि हुअ लागल। गीतहारि सबहक गीत फेर शुरू भऽ गेल छेलइ।

“आजुक दिनमाँ सुदिन या गे माय
मधुपुर भऽ गेल उछाही
कि गोरैया जसो मंत्र हे
कोन काते कात रहे बाँसक बिटिया गे माय
कोन काते चिरब कामी
कि गोरैया जसो मंत्र हे...।”

जेकरा सबहक गोहारि भऽ गेल छेलै ओ सभ एका-एकी विदा हुअ लागल। गामक शिक्षित बेरोजगार संतू आ फुलेसर ओही बाटे चौक दिस

जाइ छल। लोकक भीड़ देखते दुनुगोरे ठमैक गेल। तखैने राजेसरो अपना भातिजकेँ लेने भीड़क मध्यसँ निकलल।

ओकरा देखते फुलेसर सहैट कऽ लग गेल आ हँसैत बाजल-

“ही... ही... ही... की हौ राजेसर, तहूँ ऐ पुरना बातपर बिसवास रखने छहक। लोक केतए-सँ –केतए पहुँच गेलइ।”

राजेसर वेदना भरल आँखिसँ ओकरा दिस तकैत बाजल-

“की करबै यौ? केना हेतइ?”

फुलेसर बिच्चेमे बाजल-

“पता नै ई अंध-बिसवास गाम-घरकेँ कहिया तक घेरने रहतै आ अपटी खेतमे लोक परान दैत रहतै। हौ अनका की कहबे हमरा तँ अपने काकी ईहे कारणे आन्हर भेल छइ। एनए मेडिलक विज्ञान केते ऊपर पहुँच गेल छै से तँ बुझिते छहक।”

“सभटा बात बुझै छिऐ यौ फुलेसरजी, मुदा की करबै। टका-पैसाक अभाव छइ। डागदर लग छुछे मुहेँ काज चलतै।”

“लोक तँ जन्म लैत अछि- संघर्ष करैले। कोनो रोजगर ठाढ़ करए पड़तह। ओना काज थोड़ेचलै छइ।”

“खेती-पथारीक हाल देखते छिऐ। दोसर बिन पाइकेँ कोन रोजगार करबै ऐठाम?”

“सुनै छिऐ- बाहरोसँ लोक बहुत टका-पैसा कमा कऽ अनैतअछि।”

-कहैत फुलेसर चौक दिस चलि देलक। राजेसर गुनधुन करैत अँगना दिस विदा भऽ गेल। मुदा मनमे शंका, समस्या आ समाधान लाधल छल।

◌

11.

कृष्ण पक्ष। चारूभर अन्हरिया पसरल छल। किन्तु किछ एहनो घर छेलै जेकर इजोत देख अन्हार दूरेमे ठमकल छल।

चाहे रूप परिवर्तन जेतेक भऽ जाए मुदा अन्हार आ इजोतक संघर्ष चलिते रहै छइ। अन्हार अपना जीतपर अट्टाहास करै छै आ मदमे डुमि जाइ छै किन्तु इजोतक धियान जीत आ हारिपर नहि रहै छइ। ओ तँ अनवरत संघर्ष करैत रहै छइ। उजियारीक लेल जरैत रहै छइ। आ कहैत रहै छै-

"हम जरैत रहब, हम मरैत रहब मुदा अहाँक लेल, इजोत करैत रहब।"

सरपंचक दुआरिपर कृष्ण अष्टमीक मेला लगल छेलइ। ओकरे दरबज्जापर नाचो हेतइ। अन्हार रहितो लोक ओनैभर ससरल जा रहल छेलइ।

धान रोपल भऽ गेल छेलइ। धनरोपनीक बाद लोक अपनाकेँ निचेन जकाँ बुझै छल।

नाच देखैले सभ जा रहल छल। मरद-पुरुख गप छाँटैत आ औरतिया सभ संगोर करैत।

मपैतलालक स्त्रीकेँ सभ डाइन कहै छेलइ। ओकरा कोय नै संग करै छेलइ। दोसर कारण बजैमे सेहो ओ चरफड़ आ झनकाहि। संगे

मपैतलाल पूजिगर लोक। दस-गोरेमे उठै-बैसेबला मुँहपुरुख। अही सभ कारणे अरिपुरवालीकेँ मुँहपर कोय डाइन कहैक साहस नहि करै छेलइ।

परोछमे तँ रजो-महराजाकेँ लोक गारि पढ़ै छइ। कलेजाबला तँ ओ अछि जे सोझहामे साँच गप कहै छइ। चाहे कानमे लगौ वा कपारमे। ओना एकर फल नीक-अधला दुनू होइ छै मुदा पहिने तँ कर्म हेबाक चाही। सुच्चा कर्म!

अरिपुरवाली असगरे चलि देने छल। मने-मन गारि पढ़ैत, भिनभिनाइत। जाबे पहुँचल ताबे लोक सभ बैस गेल छल। नाचक वन्दना शुरू भऽ गेल छेलइ। ढोलक-हरमुनिया माहटरक हाथसँ बेसी मुड़ी तालपर गतिशील।

अभाव आ दुखमे कटैत जिनगीक मध्य जँ कोनो नाच-तमाशा वा उत्सव होइ छै तँ किछ क्षणक लेल जिनगी ओइ प्रसन्नतामे डुमकी मारि लैत अछि। पुन: नव शक्तिक संग समस्यासँ लड़ए लगैत अछि।

अरिपुरवाली लोकक्क पाछूमे ठाढ़ भऽ कऽ चारूभर तकलक आ फलिगर जगह देखते बैस गेल। ओकरा पते नइ छेलै जे आगूमे नरहेलपुरवाली अपना दलक औरतिया सबहक संगे बैसल अछि।

अरिपुरवालीसँ नरहेलपुरवालीकेँ पुरान झगड़ा छेलइ। दुनूटा एक दोसरक छाँहमे नहि चलै छल। नरहेलेपुरवाली ई हवा उड़ौने छेले जे अरिपुरवाली हक्कल डाइन अछि। तइ कारणे अरिपुरवाली पुरे टोलमे बदनाम भेल छल। केते-गोरे एकरा दोखियो बनौने छल।

नरहेलपुरवालीपर नजैर पड़लासँ पहिने अरिपुरवाली ओकरा पाछूमे बैस गेल छल। आब तुरन्ते बिना बहाना केने ओइठामसँ उठियो केना जाएत।

कुसंजोगसँ छनहि बाद नरहेलपुरवाली उनैट कऽ तकलक। अरिपुरवालीकेँ देखते ओकरा सौंसे देहक रूइयाँ कटो-काँट भऽ गेलइ।

बगलमे बैसल अपना दलक औरतिया सभकेँ कानमे फुसुर-फुसुर करए लगली-

"गइ भइखौकी! की तकै छीही, उठ ऐठामसँ। जान नहि बँचतौ। देखै छीही, डनियाही सहैट कऽ लगमे बैसल छौ!"

सुनैत सभ-गोरे फनफना कऽ ठाढ़ भऽ गेली। जेना लगमे साँप चलि आएल होइ। नरहेलपुरवाली-संगे सभटा औरतिया दोसर कोणपर जा बैस गेली। ओइठाम असगरे अरिपुरवाली बैसल रहि गेली। भिनभनाइत, गारि पढ़ैत, एकरबा बानर जकाँ।

नाच देखैले कालीकान्तो आएल छल। मुदा ओ कातेमे ठाढ़ भऽ कऽ भुटन रायसँ गप करै छल। तेकर कारण रहै, ओकरा संगेआएल झबरा कुत्ता। बड्ड प्रेमसँ वेचारा ओकरा पोसने अछि। ओ केतौ जाए तँ कुकुर ओकरा संग लगि जाए। ओ सोचने छल- कातेसँ कनी काल देखबआ आपस भऽ जाएब। बीचमे गेलासँ कुताक कारणे कोनो विवादो ठाढ़ भऽ सकैत अछि। थोड़े पता छेलै जे केतबो सम्हरल रहब तैयो विवाद करवनो केतौ भऽ सकैए। ओ तँ बिनु बजौल अतिथि सदृश सेहो होइत अछि।

अरिपुरवाली अपना लग चारूभर खलिया गेल जगहोकेँ देखए आ नाचो देखैत रहए।

कालीकान्तक कुत्ता ससैर कऽ अरिपुरवालीक लग चलि गेल। पाछूसँ जा कऽ ओकरा सूँघि लेलक। अरिपुरवाली पूजा-पाठ केनिहार। कुकुरकेँ सुंघैत देख फानि कऽ ठाढ़ भऽ गेली। चारूभर तकलक। भुटन राय पाछूसँ लाठीकेँ ठेकना लगौने कालीकान्तसँ गप करिते छल। अरिपुरवाली शीघ्रतासँ भुटन राय लग गेली। पाछूसँ सट्ट-दे लाठी खींच लेलक। लाठी खैंचते भुटन राय गदाक-दे खसल। मुदा अरिपुरवाली ओम्हर तकबो नहि केलक। ओ लाठी लऽ कऽ कुकुरकेँ तड़तड़बए लगली। कुकुर नेंगराइत केंकियाइत।

भुटन राय फुड़फुरा कऽ उठल आ फनकैत बजल-

“देखलिऐ यौ कालीकान्तजी। डनियाहीक किरदानी? जँ हमरा किछो हेतै तँ अहाँ गवाही रहब।”

कालीकान्त ओकर बातपर धियान नहि देलकै। ओकरा पोसा कुत्ताकेँ मारि लगल छेलइ। ओ तरेतर फोंफिया रहल छल।

हल्ल-गुल्ला भेलासँ लोक सभ जमा भऽ गेल छल। जइमे सरपंचो साहैब छला। देखतै कालीकान्त फनकए लगल-

“यौ सरपंच साहैब, अहाँ सभकेँ केते बेर कहलौं जे ओझहाकेँ मंगाऊ आऐ समस्याकेँ जड़ि-मूलसँ हटाऊ। मुदा अहाँ सभ धियाने ने दइ छिऐ। देखियो जे अखनी नाँहकमे हमरा पोसा कुकुरक जान लइ छल!”

सरपंच साहैब गम्भीर होइत बजला-

“शांत रहू कालीकान्तजी। कोनो रस्ता तँ लगबै पड़तै।”

“केना शान्त रही! अहाँ सभ नहि बुझै छिऐ जे ओ डाइन अछि?”

“हँ से तँ बुझै छिऐ। मुदा कोनो काज तँ तरीकेसँ हेतै किने।”

मखना लोक सभकेँ ठेलैत आगू आएल आ चद-दे बाजल-

“की बुझै छिऐ? केकरोपर झूठ-मूठ दोख नइ लगाबियौ। डाइन तँ होइते ने छइ। मुरुख जकाँ आइयो पुरना बातकेँ धेने छी!”

बात आर बढ़ैत तइसँ पहिने नाच पाटीक मेम्बर सभ सभकेँ बैसबए लगल।

तखैने नीता ओमहरसँ आएल। लुच्चा छौड़ा सभ कातेमे ठाढ़ छल। ओकरा देखते छौड़ा सभ आपसमे आँखि मटकबए लगल। एकटा मुँह दाबि बाजल-

“मुखड़ा चान का टुकड़ा।”

दोसर फेर बाजल-

“चाँद सार लऽ मुख घटना करू, लोचन चकित चकोरे।”

मुदा नीता केकरो गपपर धियान नहि देलक। ओ आगू बढ़ि गेलि। ओकर आँखि तँ राजेसरक खोजमे लगल छल। पएर बढ़ैत, चकौना होइत, मन उड़ैत-फिड़ैत।

किन्तु मनमे होइ जे कहुना लुच्चा छौड़ा सबहक नजैरसँ परोछमे चलि जाइ जइसँ एकरा सबहक धियान हटि कऽ दोसर दिस चलि जाएत।

शौभाग्यसँ ओ जे सोचै छेली तहिना भेलइ।

तखैने नाचक मंच लग हल्ला भेलै-

“हौ दौड़ह हौ! डकैत घेरलक!”

सभ ओम्हर ताकए लगल।

फुचकुनमा ओमहरसँ अपसियाँत होइत आएल आ बजल-

“यौ सरपंच साहैब! देखियौ, मंचक पाछूमे दूटा डकैत हथियार लेने ठाढ़ छइ। ओ हमर सभटा टका छीन लेतइ। हमरे दिस बधुआ कऽ तकै छेलइ।”

भुटन राय पुछलकै-

“हौ, टका लऽ कऽ टहलल घुरै छहक। तेकर मतलब बेसी टका रखने छहक। कोनो दाउ सुतार लहक की?”

“नै यौ भाय, हमर बेटा अपन बौह-बेटी छोड़ि कऽ दू सालसँ बाहर खटि रहल छइ। ओकरा माएकेँ मरैत काल मुँह नहि देखल भेलइ। देह टूटि गेलइ। मुदा कोनो तरहेँ एक लाख कमा कऽ लौलक। जमीन खरीदक गप कने भेल रहइ। जमीनबला जुवान बदैल लेलक। दर-बरमे झगड़ा भऽ गेलइ। आब टका केकरा लग राखब। सभ तँ बेइमाने। इमानदार अनकर काल अपना कपारपर किए लेत। तँए रातिकेँ डाँरमे खोंसने रहै छी।”

“बैंकमे किए ने रखि देलहक?”

“धुर बैंकोमे खाता खोलेनाइ कोनो असान गप छइ। देखै नै छिऐ, केतेक कागत-पत्तर माँग करै छइ। हम मुरुख छी तैयो एते तँ बुझै छी- जे जमा करै काल एतेक परेशानी तँ निकालै बेरमे कोन ठेकान।”

फुचकुनमा सरपंच साहैबदिस घुरैत आगू बजल-

“ई टका अहाँ राखू सरपंच साहैब।”

“हमरोसँ डकैत छीन लेत तब हम केतएसँ देब।”

“केना करबै यौ। ईहो एकटा काल भऽ गेल अछि। नीनो जेना भागि गेल अछि।”

एकटा लुचबा छौड़ा लग आबि बाजल-

“यौ फुचकुन काका, ऊ डकैत नै छेलइ। नाचक एक्टर छेलइ। डकैतक पाट खेलैले मेकप केने छइ। डेराउ नइ, बैस कऽ नाच देखू।”

“आब लिअ, जोड़ी देख कऽ साँपक डर।”

छौड़ा सबहक नजैर नीतापर सँ हटि गेल छल। नाच जमि गेल छेलइ। देखनिहार सभ नाचक रसमे डुमि गेल छल। आ ओइ रससँ धुआँइत अन्तरक मैल आँखिक बाटसँ जलकण बनि बहि रहल छेलै...।

सभ अपनाकेँ बिसैर जेना दोसर लोकमे भ्रमण कऽ रहल छल। संगीतक ध्वनि सूतल रातिकेँ सिहरा रहल छल।

नीता चकोना होइत ओइठामसँ निकैल गेल छलि मुदा मनक चोर पछोड़ धेनहि छेलइ।

◌

12.

नीतक पएर जइ गतिसँ चलि रहल छेलै ओही गतिसँ ओकर विचारोक क्रम बढ़ि रहल छल।

राजेसरसँ मिलैक पियासकेँ ओ केतेको दिनसँ ठकैत आ दबैत आबि रहल छल। मुदा आइ ओ इच्छा तीव्र भऽ गेल छेलइ।

ओ साँझेमे विचार केने छल जे नाचक मंच लग जरूर भेँट होएत, मुदा असफल भऽ गेल।

असफल भेलासँ केते-गोरे थिरे रहि जाइत अछि किन्तु केते-गोरे क मनमे सफलता प्राप्त करबाक तेतेक जोर मारि दइ छै जे ओ ओइ दिशामे आरो तीव्रताक संग काज करए लगैए। तहिना नीताक मिलनक इच्छा आरो तीव्र भऽ गेल छल। रहि-रहि कऽ मनमे जेना किछ उधक्का मारए लगलै।

नीता अधीर भऽ गेल। मनक चैन जेना हेरा गेल छेलै, तहिना लोक लाजक डर आ घर-परिवारक प्रतिष्ठा आदि सभ किछ बिसरए लगल। पएर राजेसरक घर दिस स्वतः बढ़ैत गेलइ, बढ़ैत गलइ। भावनामे डुमल नीता राजेसरक दुआरिपर कखन पहुँच गेल तेकर पतो ने लगल।

डेढ़िया लग ठाढ़ भऽ कऽ ओ कनी काल तक अकानैत रहल। कोनो प्रकारक शब्द नहि सुनि अँगना दिस हुलकी मारलक। सभटा

टटगघर बन्न। साइत सभ सुति रहल छल। ओना, राजेसर अँगनामे राखल चौकीपर ओंगठल छल। घरक गरमी आ मच्छरक डरे ओ बारहरेमे सुतै छल। ओसारक कोणपर एकटा डिबिया भुकभुकाइत रहइ। जेकर इजोत अन्हारसँ लड़ैमे असमर्थ छल। तैयो अस्पष्ट, मद्धिम इजोत चारू-भर पसरल छेलइ।

नीता निशबद मारने, पएर दाबने रसे-रसे लगमे चलि आएल। मुदा राजेसरकेँ तेकर अभासो ने भेल। जे कियो ओकरा लगमे आबि ठाढ़ अछि। हेबो केना करितै, राजेसर तँ अपनहि धुइनमे अन्हार दिस देखैत किछ सोचि रहल छल।

पिताक जीवन कालमे तँ ओकरा कोनो तरहक सोचे-फिकिर ने भेल छेलइ। कहुना किछ पढ़ियो-लिखियो नेने छल। मुदा पिताक मृत्यु होइते पढ़ाइयो छूटि गेलइ। भाइक काजमे संग दिअ लगल।ओहो निष्ठुर भऽ संग छोड़ि परलोकवासी भऽ गेला। आब तँ सभटा भार अपनहि कपार, भेल सवार।

काजक पाछू दौगैत-दौगैत कमजोर तन ऊपरसँ बेथित मन। आइ ओ बेसी डेरा गेल छल। कारण छेलै, चारि बर्खक भातिज। जे आइ बेसी बेमार भऽ गेल छेलइ। छौड़ा दरदसँ केतेक छटपटाइत रहइ! कनैत-कनैत बेहवाल। कनी काल पहिने कहुना कऽ निन्न पड़ल। आइ जँ छौड़ाकेँ किछ भऽ जइतै तखन भौजी केना कऽ धीरज बान्हैत। कोनो उपाय नहि भेट रहल छल! ने घरमे एकोटा पाइ छल आ ने कियो देबा लेल तैयार रहए। घरमे जे अन्न-पानि बँचलौ छेलए सेहो सभटा श्राद्ध-कर्ममे बिकाइये गेल। कोनो सहारा नजैरक सोझमे नहि आबि रहल छल...।

नचार स्थितिक विषयमे सोचैत-सोचैत राजेसरक आँखिमे हाहा कऽ नोर आबि दुनू आँखिकेँ सिमसा देने रहइ।

लगेमे ठाढ़ नीताक एक मन कहै, राजेसर सूतल अछि। किएक तँ मुड़ी ने डोलबैए। लगले दोसर मन कहलकै, नै-नै जगले अछि।

मुदा प्रतीक्षोक तँ एकटा सीमा होइते छै किने। ओना, ओहो काल आ परिस्थितिक अनुसार बदलैतो रहैए।

नीताकेँ नइ रहल गेलै तँ टोकलक-

“एना किए अनठौने छिऐ, यौ?”

जेना राजेसरक कानमे प्रेम-रस पड़ि गेलइ, तहिना मुड़ी उठौलक आ नीता दिस ताकिते रहि गेल। टुटैत मनकेँ सुखद सहारा। छातीक भीतरजेना किछ फुड़फुड़ा उठलै।

दुखद स्थितिमे अपना प्रेम-पात्रकेँ निकट देख राजेसरक आँखिसँ फेर नोर ढबढ़बाएल।

ढबढ़बाइत नोर देख नीताक सिनेह बदरिया अन्दरेमे उमड़ए-घुमड़ए लगलै। धुक-धुकी तेज भऽ गेलइ।

ओ लगमे सटि कऽ बैस गेल आ रसे-रसे राजेसरक माथ हौंसतैत बाजल-

“की भेल! एना किए कनै छी?”

राजेसर गमछासँ नोर पोछैत बाजल-

“कानब नहि तँ दोसर उपाय की। कानबो तँ सन्तोखक उपाय छिऐ। अहाँ तँ सभ किछ जनिते छी।”

“की करबै। देवी माय फेर सभकिछ नीक कऽ देती। धीरज धरू।”

“लगै छै जेना हमरा भागमे मात्र दुखेटा अछि। आइ फेर हमरा भातिजक हालत बेसी खराप भऽ गेल अछि। घरमे एकोटा पाइ नहि अछि। कानब नहि तँ की करब।”

“कोनो उपाय तँ हेबे करतै। अहीं जँ एना कानब तँ माए आ भौजीक की हालत हेतैन। अहींपर ने सभ आस छैन।”

“कोन उपाय हेतै? गिरहत किछ देबा-ले तैयार नै अछि। समए तेहेन भऽ गेल जे आने कियो मुँहपर माछी बैसए देत। सभ धनिकाहा एके जूति बनौने अछि। हमरा तँ मन होइत अछि जे फँसरी लगा कऽ मरि जाइ। मुदा माए आ भौजीक मुँह देखते मन मारि कऽ रहि जाइ छी।”

“आ हम तँ एकोबेर याइदो ने अबैत हएब। हँ-हँ, हम मने किए पड़ब।”

“अहींक याद करैत तँ हम कहुना जीब रहल छी।”

“हमरा नहि बिसरीहक। जँ बिसरबाक मन हेतह तँ ओइसँ पहिने मारि दिह हमरा।”

कहैत-कहैत नीताक आँखिसँ नोर बहए लगल। ओकरा आँखिक नोरकेँ देखते जेना राजेसर अपना दुखकेँ बिसैर गेल। सिनेह दूना वेगसँ बहए लगल। ओ भरि पाँच-के पकैड़ नीताकेँचुप करए लगल।

नीता राजेसरक छातीमे मुँह सटा कऽ हुचैक-हुचैक कानए लगल।

दुनू एक दोसराक धीरज बन्हबैत। सिनेह स्पर्श करैत। प्रेमक सागरमे डुमकी मारए लगल। केतेक काल बीतल तेकर पता दुनूमे सँ केकरो नहि छल। तेकर कारण छेलै दुनू ऐठामसँ दूर बहुत दूर सुखक संसारमे विचरण कऽ रहल छल।

सबहक परियास रहै छै जे दुखक लगसँ पलायन करी आ सुखसँ आलिंगन करी। मुदा मनक बात पूर्ण थोड़े होइ छइ।

दू जोड़ी आँखिक सोझा सपनाक सतरंगी संसार नृत्य कऽ रहल छल।

बच्चाक कानबसँ दुनूक निन्न टुटल। नीता फुरफुरा कऽ ठाढ़ भऽ गेल।

पछुआरक बँसबिट्टीमे बौगुला सभ 'कँए' 'कँए' करै छेलइ। सुरमे-सुर मिलबैत कोयली 'कुहू' 'कुहू' करए लगल।

नीता बाजल-

"हे यौ, साइत राति बीत गेल। देखै छिऐ भोरूकबा तारा।"

"हँ, तहिना बुझाइत अछि।"

"हँ, लोकक उठबाक बखत भेल जाइ छइ। किनसाइत कियो देख लेत।"

"किए, लोकक डर होइत अछि?"

"डर तँ नहि होइए। मुदा समाज...।"

"डर नइ होइए तैयो छोड़ने छी। आसपर लोक केतेक दिन जिअत?"

"बिसवास राखू।"

"बिसवास नहि रहैत तँ जीबतौं केना।"

नीता जोरसँ निसाँस खींचैत फेर बाजल-

"हे यौ, कुलानन्दक चालि-चलन बड़ खराप छइ। आ हमरा तँ नचार भऽ कऽ ओकरे ओइठाम काज करैले जाए पड़ैए।"

"चिन्ता नइ करू। किछ दिन औरो धीरज राखू। आखिर समाजमे विरोध करैले किछ सामरथियो चाही। फेर देखै छी जे हमरा के रोकैत अछि, ऐ बिआहसँ।"

बिआहक नाओं सुनिते नीता लजा गेल। मुँह सिनुरिया आम सन भऽ गेलइ। ओ मुड़ी निच्चाँ केने रसे-रसे आँगनसँ विदा भऽ गेल।

तखैने दुआरिपर कियो खोंखी केलक। दुआरिपर जाइते नीता मुड़ी उठा देखलक। सात-आठ-गोरे नाँच देख आपस जा रहल छेलइ।

नीताक आनक अँगनासँ निकलैत देख सभ ठमैक गेल। आपसी इशारा आ कनफुसकी करए लगल।

"चढ़ि गेल छौ चोटपर।"

"पकैड़ ले अहीठाम।"

"नइ रौ। विचार कऽ ले पहिने। तब खेला करिहैं।"

"कुलानन्द कोनए गेलौं रे?"

"ओनए कुलानन्द सोर पाड़ै छौ। पहिने बुझि ले।"

नीताक पएरमे जेना पाँखि लगि गेल छल। द्रुत गतिसँ अपना घर दिस जा रहल छल।



13.

आइ सुरुज अन्तिमो पहरमे कड़कड़ौआ रौद उगलैते छेलइ। खुरपेरिया बाट सुन-मसान छल। मेघक एगो टुकड़ी दौगैत आबि रहल छेलै मुदा केतेक काल रोकि सकत ओ एहेन अगिलगौना रौदकेँ।

राजेसर एकपेरिया धेने टीसनदिस बढ़ल जा रहल छल। संगी-साथी सभ आगू चलि गेल छेलइ। तँए हड़बड़ाएल सन, नमहर डेग। घुमि-घुमि गामो दिस तकै छल। जेना किछ बिसैर गेल होइ वा किछ छूटल जा रहल होइ।

आइ भोरेमे ओ सोचि नेने छल जे गामपर रहने आब गुजर नहि चलत। करजाक भार बेमार भातिज, पलिवारक खरच, सभ चीजकेँ देखैत जेना ओ डरे भीतरसँ थरथरा गेल छल।

मखना सभ किछ बुझने छेलै तँए बोल-भरोस दैत कहने छल-

“भाय एनामे काज नहि चलत। अपना पएरपर ठाढ़ हुअ पड़त।”

मुदा ठाढ़ होइले किछु टका-पैसा तँ चाही। अही सबहक विषयमे सोचैत ओ दिल्ली, पंजाब जाइबला जन-मजदूरक पछोर धऽ नेने छल।

किछ पूजी जँ हाथमे रहत तँ खेतियो नीकसँ कऽ सकब। मन-मन सोचैत आ डेग बढ़बैत।

मुदा घरक मोह जेना आगूमे रहि-रहि कऽ ठाढ़ भऽ जाइ छेलइ।

बचपनसँ लऽ कऽ आइ धरि ओ कहियो एतेक दूर नहि निकलल छल। दिल्ली-पंजाबक नामेटा सुनने छल तँए मनमे डेराओन सन बुझाइ छेलइ। केतेको प्रकारक शंका सभ मनमे उठि रहल छेलइ। बचपनसँ जइ गाम-घरमे कुदैत-फानैत जवान भेल छल तेकरा छोड़ैत मोह उठि रहल छेलइ। संगी-तुरियाक संग बाजब-भुकब, हँसब-खेलब सभटा यादि आबि रहल छेलइ। मुदा परिस्थितिक आगू नचार।

निरूपाय! सभटा बन्हनकेँ तोड़ैत ओ दौगैत स्टेशनपर पहुँच गेल छल।

◌